पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

कार्तिक-मार्गशीर्ष, कलियुगाब्द 5118, नवम्बर, 2016

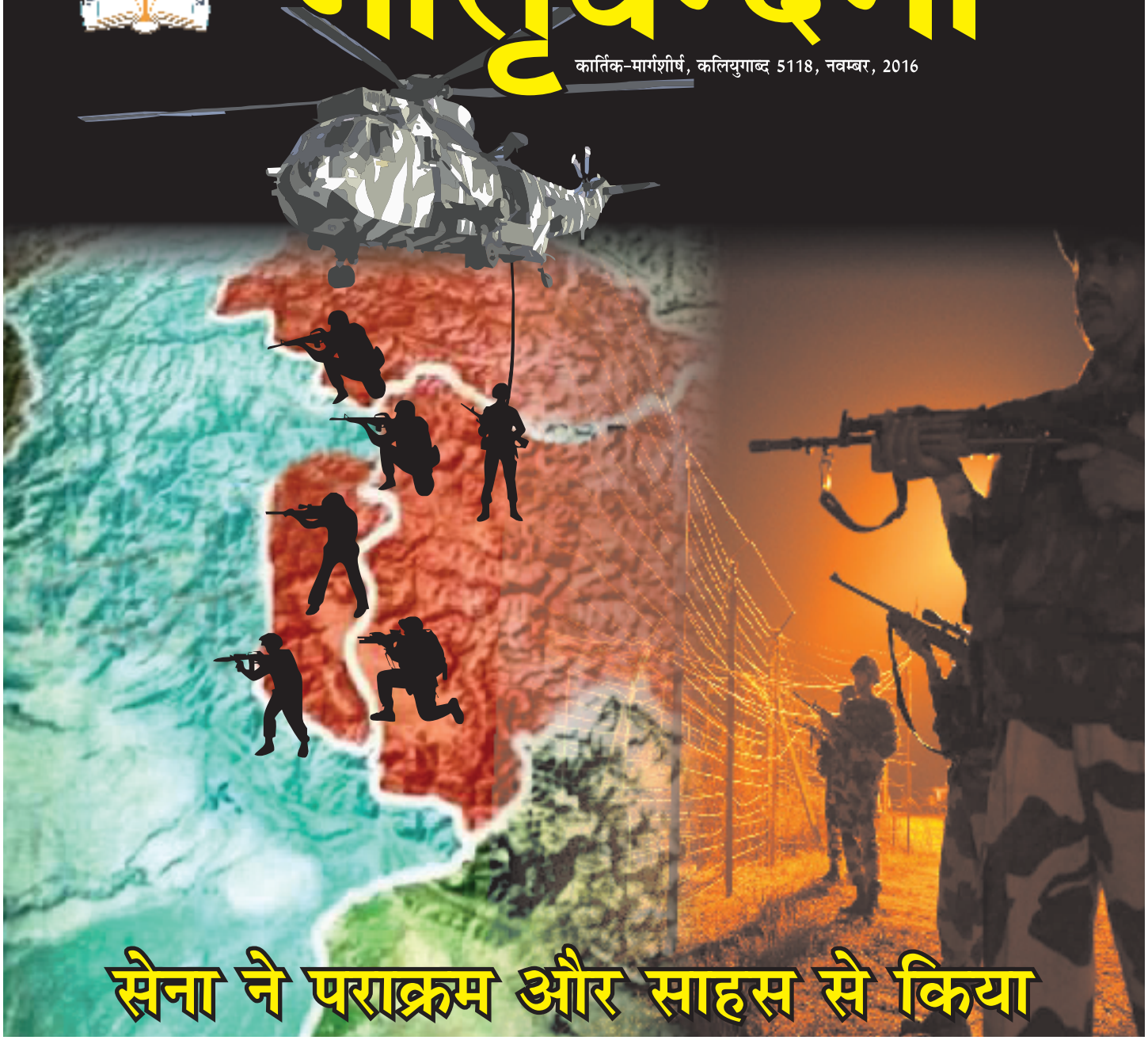

सेना ने पराक्रम और साहस से किया

सर्जिकल स्ट्राइक

STERLING
Sports Rehab. & Advance Physiotherapy Centre
STERLING SPORTS REHAB. &
ADVANCE PHYSIOTHERAPY CENTRE
Think Painfree...
Think Physiotherapy
with us
Dr. Gaurav Sharma (PT)
Musculoskeletal & Sports Injury Specialist-Ortho (Gold Medalist)
Internationally Certified in Exercise Testing & Prescription
Co-founder & H.O.D. of Sterling Physiotherapy Centre
WE TREAT
The Following
Orthopedic
& Sports
Conditions:
Joint Pain
Arthritis
Super specialized Center for Back Pain
Advance rehabilitation for acute & chronic sports injuries
Advanced & Hi-Tech Equipments
Awareness sessions & Treatment according to work related environment & injuries
Tricity's First Advanced Physiotherapy
& Sports Rehabilitation Center
SCO 226-227, 1st Floor, Sector 34 A, Chandigarh-160022 Ph.:0172-4000414
inquiry@ssrp.in, info@ssrp.in www.ssrp.in

Global Printlink
Graphics Pvt.Ltd.
More refreshing in 3D
Indoor & Outdoor Branding
Customized Wall Decor
Corporate Gifts
Designing, Branding, Printing & Packaging
Fastest & High Quality Printing in Tricity
HP Latex 360
WE CAN PRINT
Wall Vinyl
Glass Film
Wall Covering
Cloth Banners
Artistic Canvas
Banners & Posters
Frontlits & Backlits
Printing on Leathrite
...and many more
for more details Call:
9041 444 799 | 0172-4664799
SCO 226-227, 1st Floor, Sector 34 A, Chandigarh - 160 022
E-mail: globalprintlink34@gmail.com

धर्म यो बाधते धर्मो न स धर्मः कुधर्म तत्।
अविरोधात्तु यो धर्मः स धर्मः सत्यविक्रमः।।

अर्थात् जो धर्म अन्य धर्म को बाधा पहुंचाता है वह धर्म नहीं, कुधर्म है। जो धर्म अन्य धर्मों का विरोध नहीं करता, वही यथार्थ धर्म है।

वर्ष : 16 अंक : 11

मातृवन्दना

कार्तिक-मार्गशीर्ष, कलियुगाब्द 5118, नवम्बर, 2016

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
राजेन्द्र शर्मा
महेश्वर दत्त

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

श्रेय व सम्मान के प्रमुख पात्र...

पाकिस्तान प्रायोजित आंतकवाद के निवारण में हमारे सैनिकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दुनिया के देश मान चुके हैं कि पाकिस्तान ही आंतक की फैक्ट्री बन चुका है किन्तु पुष्ट प्रमाण दिये जाने पर भी वह स्वयं को पाक व साफ मानता है। अब जब भारत की सेना ने एल.ओ.सी. पार कर पी.ओ.के. में घुसकर सर्जिकल स्ट्राइक से उसके सात आंतकी प्रशिक्षण शिविरों को ध्वस्त कर दिया है तो वह तिलमिला रहा है . . .

सम्पादकीय	*श्रेय व सम्मान के प्रमुख पात्र*	3
प्रेरक प्रसंग	*जाति न पूछो साधु की*	4
चिंतन	*हमारी दिनचर्या का मुख्य*	5
आवरण	*जिहादी जहर का जवाब*	6
संगठनम्	*दूसरे के कष्टों को*	10
पुण्य जयंती	*गुरु नानक देव*	12
देश-प्रदेश	*इसरो ने अंतरिक्ष में लगाई*	13
देवभूमि	*मंडी को देश में*	15
घूमती कलम	*आईआईटी में होगी संस्कृत*	17
काव्य-जगत	*शहादत को नमन*	20
स्वास्थ्य	*रसोईघर एक आयुर्वेदशाला*	21
कृषि	*पौष्टिकता से भरपूर*	22
विविध	*विजयादशमी उत्सव पर सरसंघचालक*	23
महिला जगत	*भारत की पहली महिला*	26
दृष्टि	*जज्बा-ए-राष्ट्र को*	27
विश्वदर्शन	*संयुक्त राष्ट्र चार्टर*	28
समसामयिकी	*निम्नतम स्तर पर राजनीति*	29
बाल जगत	*अपनी संस्कृति को पहचानें*	31

पाठकों के पत्र

सम्पादक महोदय,

पाकिस्तान ने एक लम्बे समय से भारत के खिलाफ परोक्ष युद्ध चला रखा है। हमारे सैनिक दुश्मनों के मंसूबों का मुंह तोड़ जबाव देते आए हैं। आवश्यकता पड़ने पर अपनी शहादत देने में भी गुरेज़ नहीं करते हैं। सैनिक अपनी नींद छोड़कर देश के लोगों को चैन का जीवन देते हैं। ऐसा लगता है, सैनिकों की शहादत से कुछ लोगों को कोई मतलब नहीं है। जब देश में युद्ध जैसे हालात हों और इसमें हमारे सैनिक अपनी कुर्बानी दे रहे हों ऐसे में कुछ लोगों को पाक कलाकारों के जाने का दु:ख हो रहा है। हमारे वीर जवानों के लिए कोई भावना नहीं है। सेना द्वारा किए गए सर्जिकल स्ट्राइक ने भारत की क्षमता को दुनिया को दिखाया है। सेना ने जन भावना को मूर्त रूप दिया है।

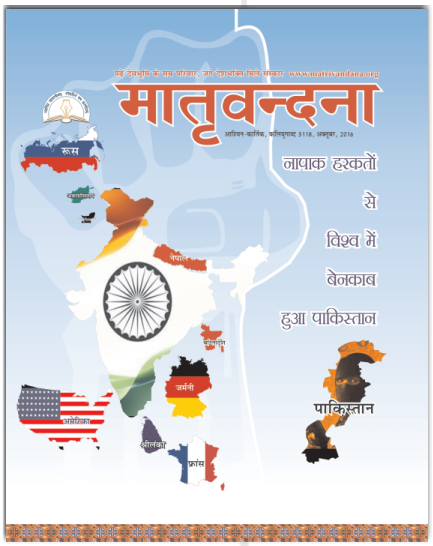

इस प्रकार के आप्रेशन गोपनीय होते हैं। कुछ लोग दुनिया को इसके सबूत देने की प्रधानमंत्री से अपील कर रहे हैं। देश के मौजूदा हालात का लाभ अपनी सत्ता के प्रसार के लिए प्रयोग कर रहे हैं। अब प्रश्न उठता है देश के दुश्मनों को जबाव देने की जिम्मेदारी केवल हमारे जवानों की है? यदि सरहद पर तैनात सैनिकों ने उन फिल्मी और राजनीति का व्यापार करने वाले लोगों की तरह सोचना शुरू किया तो कल्पना कीजिए हमारे देश का क्या होगा। युद्ध जैसे हालात में हमारी हमदर्दी हमारे जवानों के लिए होनी चाहिए न कि किसी विदेशी कलाकार के लिए। जिनकी कमाई का एक हिस्सा टैक्स में पाक की सरकार के खाते में जाता है। वही पैसा आतंकवादी तैयार कर भारत में भेज दिया जाता है। अपने सैनिकों पर हमें गर्व होना चाहिए। ये ही इस देश के असली नेता हैं। यही हमारे नायक हैं इन्हें हमारा प्रणाम और जय हिन्द।❖ *जोगिन्द्र ठाकुर (भल्याणी, कुल्लू)*

पाठकों के सुझाव व सन्देश हेतु सम्पर्क सूत्र :
0177-2836990

महोदय,

संघ प्रमुख का बयान सही है कि सर्जिकल स्ट्राइक से भारत की साख बढ़ी है क्योंकि संयम भी एक सीमा तक ही उचित लगता है। पाकिस्तान आंतकियों व अन्य देशों को भी संदेश मिल गया है कि मोदी सरकार आंतक से डरने या झुकने वाली नहीं। मातृवन्दना का नियमित पाठक हूं, सर्जिकल स्ट्राईक पर अपने उद्‌गार मैं इस प्रकार प्रक्ट कर रहा हूं।

सबूत मांगने वालो व पानी में डूब मरना चाहिए।
पूरे भारत ने झूमकर खूब मनाई दीवाली
वीर जवानों ने जब दुश्मन की रीढ़ तोड़ डाली
सेना को बधाई, हर चेहरे पर छाई लाली
आंतकियों के घर घुसकर, हवा उनकी निकाली।
हैरान परेशान हैं आंतकियों के दुष्ट आका
जैसे अचानक पड़ा हो, घर में किसी के डाका।
अभी तक है कोमा में, बहकी बहकी करें बातें
दुष्ट कहां मानते हैं पड़े न जब तक लातें।
सबूत मांगने वालों, कुछ तो करो शर्म
करतूतें तुम्हारी बताती नहीं कोई जात धर्म।
मां से मां होने का, नहीं मांगता कोई सबूत
हरकत जो ऐसी करे, नहीं उससे बड़ा कपूत।
नमक खाते भारत का, क्यों दिल है पाकिस्तानी
जनता जाग उठी तो, करा देगी याद नानी।
मूर्खों सी भाषा बंद करो, एकजुट हो जाओ
देशद्रोही बयानों से तुम बाज आ जाओ
तिरंगा, वतन, सेना इन्हीं से अपनी शान है
नहीं चुका सकते कर्ज इनका, ये इतने महान हैं।
बचे आंतकियों को भी, ऐसे ही करना हलाल
'विग' फिर हम मनाएंगे, झूम-झूम कर नया साल ❖

मुकेश विग, ठोडो ग्राऊंड, सोलन

स्मरणीय दिवस (नवम्बर)

भैया दूज	01 नवम्बर
हरि प्रबोधिनी एकादशी	11 नवम्बर
गुरू नानक देव जयन्ती	14 नवम्बर
श्री राम जानकी विवाहोत्सव	18 नवम्बर
काल भैरव जयंती	21 नवम्बर
गुरू तेगबहादुर शहीदी दिवस	24 नवम्बर
उत्पन्ना एकादशी	25 नवम्बर

श्रेय व सम्मान के प्रमुख पात्र हैं हमारे सैनिक

प्रत्येक व्यक्ति इस संसार में सुखद जीवन की कामना करता है। इस हेतु वह अपने जीवन में कोई न कोई लक्ष्य निर्धारित करता है और उस लक्ष्यपूर्ति के लिए दिन-रात मेहनत करता है। अपने बुद्धि-बल, विवेक, चतुराई, कौशल तथा श्रम से अधिकांश लोग अपने गंतव्य मार्ग का अनुसरण कर सफलता प्राप्त करते हैं। हां ऐसे भी बहुत लोग हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों एवं अपनी कमजोरियों के कारण मनचाही सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी, उद्योगपति, वैज्ञानिक, डॉक्टर, इन्जिनियर, शिक्षक, तथा प्रबन्धन क्षेत्र से जुड़े लोग जहाँ एक ओर अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठाते हैं वहां देश के विकास में भी उनकी सहभागिता बनी रहती है। दूसरी ओर वे लोग जो उतनी कामयाबी हासिल नहीं कर सकते, विविध कार्य क्षेत्रों में अपने कौशल एवं क्षमता से कार्य करते हुए अपना जीवन यापन करते हैं और कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में वे देश के विकास में योगदान करते हैं। समाज अथवा देशवासी तभी आगे बढ़ रहे हैं और अपनी इच्छाओं की पूर्ति करते हुए सुखमय एवं सुरक्षित जीवन व्यतीत कर रहे हैं जब हमारा राष्ट्र सुरक्षित एवं सुदृढ़ है और इसकी सीमाएं भी सुरक्षित हैं।

हम भूल जाते हैं कि इस देश में एक ऐसा सैन्य वर्ग भी है जो राष्ट्र की सुरक्षा हेतु स्वेच्छा से अपने जीवन को अर्पित करने के लिए सदा तत्पर रहता है और पूरे देशवासियों की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तैयार रहता है। वह सैनिक जो माईनस 40 डिग्री तापमान में सियाचिन पर और 52 डिग्री के उबलते अंधड़ों वाली रेतीली जैसलमेर से सटी सीमा पर कमर कसकर खड़ा रहता है। जब वह सीमा पर लड़ता है, शत्रुओं को मारता है, स्वयं शहीद होता है तो सुखद कल्पना करने वाले कितने देशवासियों का मन अभिमान, मौन श्रद्धांजलि एवं बिछुड़ने के अवसाद से भर उठता है? पूर्वोतर तथा अन्य नक्सल पीड़ित प्रदेशों के बीहड़ जंगलों में सुरक्षाबलों पर जब अचानक आक्रमण होता है अथवा रास्तों में बिछी बारूदी सुरंगों में विस्फोट होता है और उनका पूरा काफिला ही मृत्यु की आगोश में पहुंचता है तो क्या पूरा देश पीड़ित होता है?

अगस्त मास के अंक के सम्पादकीय में कश्मीर की स्थिति का वर्णन किया गया था। वहां मैंने हर जगह सुरक्षा बलों की तैनाती देखी। खुले में खड़े जवान हाथ में हथियार लिए बड़ी मुस्तैदी से अपनी ड्यूटी दे रहे हैं ताकि कोई वारदात न हो, आम लोग शान्तिपूर्वक एवं निर्भयता से अपनी दिनचर्या पूरी कर सके,पर वे भी आशंकित रहते हैं कि न जाने कहां से कोई उपद्रवी दल अचानक उन पर आक्रमण न कर दे। क्या उन्हें भी अपनी जान प्यारी नहीं? लेकिन अपने देश तथा आम जनता के सुखचैन के लिए वे अपनी जान की बाजी लगाने के लिए तैयार रहते हैं। इन सब वीर सैनिकों के प्रति सर्वाधिक सम्मान देना क्या हमारा नैतिक कर्तव्य नहीं बनता? सैनिकों का आत्म सम्मान बना रहे, इसलिए उनकी राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में चर्चा या आलोचना जायज नहीं।

पाकिस्तान प्रायोजित आंतकवाद के निवारण में हमारे सैनिकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दुनिया के देश मान चुके हैं कि पाकिस्तान ही आंतक की फैक्टरी बन चुका है किन्तु पुष्ट प्रमाण दिये जाने पर भी वह स्वयं को पाक व साफ मानता है। अब जब भारत की सेना ने एल.ओ.सी. पार कर पी.ओ.के. में घुसकर सर्जिकल स्ट्राइक से उसके सात आंतकी प्रशिक्षण शिविरों को ध्वस्त कर दिया है तो वह तिलमिला रहा है। सीधे युद्ध करने की उसकी क्षमता नहीं। हमारे वीर सैनिक सीमा पर दीवार बन कर खड़े हैं। पूरा देश उनके पीछे खड़ा है। इन वीरों को शत्-शत् नमन।

जाति न पूछो साधु की

रेल यात्रा कर रहे एक तिलकधारी सेठ जब अपना भोजन का डिब्बा खोलने लगे तो पास ही बैठे खद्दरधारी नेता को देखकर उन्होंने पूछा- 'नेता जी, आप किस जाति के हैं?

'जाति न पूछो साध की....' वाली कहावत तो आपने सुनी ही होगी।

'साधु से नहीं पूछेंगे नेता जी! आप ने गेरूए कपड़े नहीं खादी पहनी है। आजकल सभी नेतागिरी चमकाने के लिए खादी पहन लेते हैं। अपनी जाति बताने में हर्ज ही क्या है?'

नहीं सेठ जी, जाति बताने में या छिपाने से कुछ नहीं होता, परन्तु किसी एक जाति का हूं तो बताऊं। प्रात:काल जब मैं घर-आंगन-शौचालय की सफाई करता हूं तो पूरी तरह मेहतर हो जाता हूं, जब अपने जूते साफ करता हूं तो मोची, दाढ़ी बनाते समय नाई, कपड़े धोते समय धोबी, पानी भरत समय कहार, हिसाब करते समय बनिया और कॉलेज में पढ़ाते समय ब्राह्मण हो जाता हूं। अब आप ही तय करें कि मेरी जाति क्या है?' तब तक स्टेशन आ गया। स्वागत में आई अपार भीड़ ने नेताजी को हारों से लाद दिया। नेता जी थे- आचार्य कृपलानी। ❖

समरसता का भाव अपने घर से प्रारम्भ करें

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक पू. रज्जू भैया ने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए समरसता के विषय में कहा था। समरसता का भाव अपने घर से प्रारम्भ करें। उन्होंने इस संदर्भ में अपने परिवार की एक घटना भी सुनाई। उन्होंने बताया- 'हमारे घर में भोजन बनाने एक प्रौढ़ महिला आती थी। उन ठकुरानी की मानसिकता पुराने रूढ़िगत संस्कारों के कारण 'ठाकुरपन' की थी, अत: अन्य किसी की जूठी थाली उठाना कठिन था। मेरे संघ के स्वयंसेवक होने के कारण अनेक कार्यकर्ता हमारे साथ-साथ घर पर आते थे। साथ-साथ भोजन करते। उनमें से अनेक तथाकथित छोटी जातियों के भी होते थे पर हमारे लिए तो सब समान थे, पर ठकुरानी को कौन समझाए, कैसे समझाए, ऐसे में, मैं स्वयं ठकुरानी को कहता था, अपने और काम देखें और मैं स्वयं उन स्वयंसेवकों की थाली उठाकर ले जाता था। वह ठकुरानी हमें स्नेह भी बहुत करती थी, जब उन्होंने मुझे जूठी थालियां उठाते देखा तो उनका भी मन बदल गया। इससे यह बात ध्यान में आई कि दूसरों के कहने की जगह स्वयं अपने आप समरसता का व्यवहार करो। यह प्रक्रिया अपने-अपने घरों में भी आवश्यक है, इससे समरसता आएगी। ❖

संवेदना का सुख

एक नारी की चीत्कार ने अपने खेतों से लौटते हुए एक व्यक्ति को चौंका दिया। जिधर से आवाज आई वहां जाने पर देखा कि एक गरीब दिखने वाली हरिजन पासी महिला चीखते-चीखते अचेता हो गई। एक काले सांप को भागते देखकर सब कुछ समझ में आ गया। उसने तुरन्त जिस दाहिने पैर में सर्प ने डसा था उसे ऊपर की ओर दबाकर पकड़ लिया जिससे जहर न फैले। पर कब तक पकड़ता बांधने के लिए कुछ नहीं मिला तो अपना जनेऊ उतारकर ही कसकर बांध दिया। काटे हुए स्थान पर हंसिया से कुरेद कर काला खून निकाल दिया। तब तक गांव के और लोग भी उधर आ गए। 'पवित्र जनेऊ से छुआ कर इसने धर्म का सत्यानाश कर दिया।' कुछ धर्म के ठेकेदारों ने निंदा करते हुए कहा। पर वह परोपकारी उस ओर ध्यान न देकर उस महिला की प्राण रक्षा में लगा रहा और आखिर उसके प्राण बचा ही लिए। ऐसे महान् व्यक्ति थे हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी। ❖

हमारी दिनचर्या का मुख्य ध्येय निज स्वार्थ

- के.सी. शर्मा गगलवी

हमारा सबसे बड़ा शत्रु स्वार्थ है जब हम एक उन्नत और सभ्य समाज में रह रहे हैं तब हमें स्वार्थी न हो कर सामूहिक कल्याण की ओर अग्रसर होना चाहिए। आज निजी स्वार्थ सब से बड़ी बुराई है। इसी बुराई से भ्रष्टाचार उपजा, आमदनी से अधिक सम्पत्ति अर्जित करने की लालसा उपजी। गरीब अमीर के बीच आर्थिक सामर्थ्य का फासला बढ़ा। असमानता बढ़ी। असमानता बढ़ने से ही आरक्षण की नीति निरन्तर सरकारों द्वारा लागू की जा रही है। यह विषय एक राजनीतिक हथियार बन गया जिसे लाभ के रूप में लिया जाने लगा। इसी से समाज बंटता जा रहा है और एक ऐसी भिन्नता उत्पन्न हो रही है जिससे अयोग्य योग्य के बीच मतभेद उत्पन्न हो गया है। इस विषय पर ज्यादा चर्चा करना संविधानिक तौर पर मुनासिब नहीं रहेगा।

बुनियादी तौर पर भौतिक विकास ने हमें अपनी पैरों तले की जमीन छोड़ने पर विवश कर दिया। हम भ्रष्ट हुए हो रहे हैं और अपने धर्म के प्रति हमारी रूचि कम होती जा रही है। सभी धर्म अपने अपने दायरे में सिमट गए और सहनशीलता की सीमा भी अपने-अपने तीरके से बांध ली। कुछ समय पहले हम सभी ने सहनशीलता, शांत अशांत भारत को लेकर भिन्न-भिन्न चर्चाएं सुनी और पढ़ी है। जब सभी स्वार्थी हो जाएं तो कई विवाद उत्पन्न हो जाते हैं। निज स्वार्थ ने भारतीय समाज को बड़ी हानि पहुंचाई है। आज भी भारत गरीब मुल्कों की श्रेणी में दर्ज है लेकिन विश्व में बड़े अमीर लोगों में कुछ भारतीय भी शामिल हैं। विश्वस्तर के उद्योग सम्राट भारतीय भी है जो रहते विदेशों में है और व्यापार भारत के द्वारा हो रहा है।

जब हम एक देश के नागरिक हैं हमारे कर्तव्य और अधिकार एक समान हैं फिर आज अमीर और गरीब में इतना अंतर क्यों? आज जम्मू कश्मीर में जो अशांत माहौल उत्पन्न हुआ है इस उपद्रव की मूलजड़ भी असमानता है। कश्मीरी जनता भारत के साथ है उन्हें भारत के साथ ही रहना है कश्मीर में गरीबी है बेरोजगारी है असमानता है जिसके कारण कश्मीर में उफान आता रहा है। पाकिस्तान कश्मीरियों को भड़का रहा है गुमराह कर रहा है लेकिन यह संभव नहीं कि कश्मीरी कभी विभाजन का समर्थन करेंगे। राजनीति में जिस दिन निज स्वार्थ की भावना का अंत होगा, कभी कहीं भी विरोध नहीं होगा। निज स्वार्थ के अवगुण ने आज हमारे समक्ष जटिल समस्याएं खड़ी कर दी हैं। सामूहिक हित के लिए हमें आगे बढ़ना होगा।❖ **लेखक सेना से सेवानिवृत्त सूबेदार मेजर हैं।**

अब पहनें खादी के जूते

खादी ब्रांड की खास बात यह है, कि ये ब्रांड बहुराष्ट्रीय कंपनियों से प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखते हुए लाया गया है। युवा खादी ब्रांड के अंतर्गत पहली बार खादी के जूते लांच किए गए हैं। देश में पहली बार खादी के जूते हाथ से काते और सिले गए हैं। युवा खादी ब्रांड और खादी के जूते देश को एक नया नजरिया देंगे। खादी के जूते का अनावरण करते हुए गिरिराज सिंह ने कहा कि देश में एमएसएमई मंत्रालय युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई योजनाएं लाया है। इससे लोगों को रोजगार मिलेगा। उन्होंने कहा, कि खादी को बढ़ावा देने से घर-घर में रोजगार पहुंचेगा। सांसद मनोज तिवारी खादी के जूतों को देख काफी प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, कि खादी की पहुंच घर-घर तक है, सूत महिलाएं कात लेती हैं इसलिए इसे बढ़ावा देने से महिलाओं और बच्चियों में भी रोजगार बढ़ेगा।

खादी और स्वदेशी चीजों को युवा ही आगे बढ़ा सकते हैं, सरकार ने युवाओं को रोजगार मुहैया कराने के लिए कई योजनाएं पेश की हैं, जिससे युवा बैंकों से लोन लेकर अपना काम शुरू कर सकते हैं। कई लोगों को रोजगार भी दे सकते हैं। युवा खादी के निदेशक और फाउंडर पीयूष प्रियदर्शी ने कहा, कि अभी युवा खादी ब्रांड ने जूते लांच किए गये हैं, जिसकी कीमत 1000 रूपये से लेकर 2000 रूपए है। ये जूते युवा भारत को सोचकर डिजाइन किए गए हैं। आगामी दिनों मे युवा खादी ब्रांड के अंतर्गत महिलाओं के कपड़े और एसेसरीज को लांच करने की योजना है। युवा खादी के अंतर्गत हमने गैर सरकारी संस्था 'धरोहर' से हाथ मिलाया है। हमारा उद्देश्य लोगों तक रोजगार पहुंचाना है। अभी हमारे यहां धरोहर के साथ मिलकर एक हजार महिलाएं और युवा कारीगर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, हमारा मोटो ''थिंक स्वदेशी बाई स्वदेशी''।❖

जिहादी जहर का जवाब

भारत की साहसी और पराक्रमी सेना ने वह कर दिखाया है जिसकी क्षमता पर आज तक किसी को संदेह नहीं रहा, किंतु राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी ने सदैव ही उसके हाथों को बांधे रखा। विगत मास की रात भारतीय सेना ने नियंत्रण रेखा पार करके पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंक के ठिकानों को जमींदोज कर दिया। जब डीजीएमओ ने सर्जिकल स्ट्राइक की जानकारी सार्वजनिक की तो देश में जश्न प्रारंभ हो गया। सोशल मीडिया पर बधाइयों का सिलसिला शुरू हो गया। भारत की यह सर्जिकल स्ट्राइक दो महत्वपूर्ण बातों को रेखांकित करती है। पहला, आतंकवाद से मुकाबला करने में भारत अब अमेरिका और इजरायल जैसे देशों की कतार में खड़ा हो गया है। दूसरा, परमाणु हथियारों से लैस पाकिस्तान से भारत आज भी केवल पारंपरिक हथियारों और उपकरणों से निपट सकता है।

अब तक विश्व में अमेरिका और इजरायल ही अपने दुश्मनों को चाहे वे उनके देश के भीतर हो या फिर विश्व के किसी भी कोने में छिपे हों, उन्हें खोजकर-खदेड़कर ठिकाने लगाने के लिए विख्यात रहे हैं। राजग-2 के शासनकाल में विगत वर्ष जून में म्यांमार की सीमा में घुसकर भारतीय सैनिकों ने सर्वप्रथम नागा विद्रोहियों के शिविरों को ध्वस्त किया था और इस बार पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में तीन किलोमीटर भीतर घुसकर उड़ी के आतंकी हमले में 18 वीर जवानों की शहादत का बदला ले किया। भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक के लिए अपने सबसे श्रेष्ठ कमांडो को चुना था। जिन आतंकियों को मौत के घाट उतारा गया है, वे भारत में घुसपैठ के लिए तैयार बैठे थे। इसके पश्चात् एक योजनाबद्ध रणनीति के तहत भारत ने पीओके में सैन्य अभियान चलाया, जिसमें उसे भारी सफलता प्राप्त हुई। नि:संदेह भारतीय सेना सदैव ही अपनी मातृभूमि की रक्षा की खातिर बलिदान देने के लिए तैयार रहती है, किंतु राजनीतिक आत्मबल और ठोस निर्णय लेने की क्षमता की कमी ने हमेशा देश के जवानों के मनोबल को तोड़ने का काम किया है। वर्तमान केंद्र सरकार ने उसी अवरोध को हटाने का काम किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृढ़ व्यक्तित्व और मजबूत नेतृत्व के कारण ही सेना ने आतंकियों के घर में घुसकर उन्हें 'जन्नत' की सैर करवा दी है।

तीन प्रत्यक्ष युद्धों में करारी हार का सामना करने के बाद भी पाकिस्तान अपनी पुरानी विषाक्त नीति पर काम कर रहा है, जिसके अंतर्गत वह भारत को हजार घाव देकर उसे खत्म करने का सपना आज भी देख रहा है। उसे भ्रम है कि एक परमाणु संपन्न राष्ट्र होने के कारण भारत उस पर कभी जवाबी कार्रवाई नहीं करेगा। उड़ी हमले के बदले ने पाकिस्तान की इसी गलतफहमी की सर्जरी कर दी है।

पाकिस्तान द्वारा भारत के सर्जिकल स्ट्राइक के दावे को झूठा बताने को अधिक गंभीरता से लेने की आवश्यकता नहीं है। 14 अगस्त 1947 में जब मजहब के आधार पर देश का रक्तरंजित बंटवारा हुआ और पाकिस्तान का जन्म हुआ तब दो माह पश्चात अक्तूबर में उसने जम्मू-कश्मीर पर कट्टरपंथी कबाइलियों की मदद से हमला कर दिया था। आज तक पाकिस्तान इससे इंकार करता आ रहा है। क्या पाकिस्तान ने वर्ष 1971 में बांग्लादेश में उसके द्वारा किए नरसंहार को स्वीकार किया है?क्या आतंकी अजमल कसाब और बहादुर अली को पाकिस्तान ने अपना

नागरिक माना है? सर्वविदित है कि पाकिस्तान में जनता द्वारा चुनी हुई सरकार का कोई वर्चस्व नहीं है। वहां की वास्तविक शक्तियां मजहबी जुनून से प्रेरित सेना और कट्टरपंथियों के हाथों में है। पाकिस्तान के पूर्व राजनयिक हुसैन हक्कानी की पुस्तक 'बिटवीन द मॉस्क एंड द मिलिट्री' में पाकिस्तानी सैन्य-मुल्लाओं के विषाक्त संयोजन का विस्तार से विवरण है। हक्कानी की पुस्तक के अतिरिक्त पश्चिमी देशों ने भी पाकिस्तान की विषाक्त मानसिकता का अध्ययन किया है। वह सभी बिना किसी अपवाद के इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि पाकिस्तान के मूल अस्तित्व और वहां के सत्ता अधिष्ठानों का निशाना केवल भारत ही है, जो विश्व में एक सफल लोकतांत्रिक राष्ट्र है और जिसे वैश्विक निवेश के लिए सबसे उपयुक्त स्थान के रूप में देखा जा रहा है।

हमारे देश में पाकिस्तान से वार्ता के पैरोकार, जो सांस्कृतिक संबंधों की दुहाई देकर दोनों देशों के बीच शांति कायम करने की बात करते हैं और उसी आधार पर उपमहाद्वीप को एक बताते हैं, ऐसी ही आशा सीमा पार बैठे लोगों से भी लगा लेते हैं। उनके अनुसार पाकिस्तान में उफनती भारत विरोधी भावनाएं एक विषाणु की तरह है, जिसका सफाया संभव है। किंतु आज तक शांति के इन दूतों को इसमें अपेक्षित सफलता नहीं मिली है। इसका मूल कारण यह है कि पाकिस्तान के कट्टर शासकों और वहां के अधिकांश जनमानस का एक ही एजेंडा रहा कि भारत की सनातन बहुलतावादी संस्कृति को नष्ट किया जाए और इस धरती पर अरब प्रेरित इस्लामी निजाम को स्थापित किया जाए। वर्ष 2011 की एक अमेरिकी रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान के मदरसों और स्कूलों में छात्रों को हिंदुओं के खिलाफ नफरत का पाठ पढ़ाया जाता है और गैरमुस्लिमों को इस्लाम का दुश्मन बताया जाता है। कश्मीर में जिहादी और विषाक्त कट्टर मानसिकता को घाटी में लग रहे नारों से समझा जा सकता है, किंतु क्या कारण है कि अमेरिका में एक शिक्षित मुस्लिम युवा नामी क्लब में गोलीबारी कर निरपराधों को मौत के घाट उतारता है? क्यों फ्रांस में ट्रक से लोगों को कुचल दिया जाता है?

ऐसा क्यों है कि अफगानिस्तान और पाकिस्तान में मुस्लिम अपने मजहब के लोगों को मौत के घाट उतारने पर आमादा है? यह कटु सत्य है कि इन सभी दुष्कर्मों को करने वालों का दावा है कि उनका प्रेरणास्त्रोत इस्लाम है। इन सबके लिए उनके ब्रांड के इस्लाम को छोड़कर बाकी सभी 'कुफ्र' है। उनके अनुसार 'काफिरों' को अपने पाले में लाने के लिए विवश करना या फिर उन्हें मौत के घाट उतारना एक सच्चे मुसलमान का मजहबी दायित्व है।

इस खतरनाक सोच का असर आज कई मुस्लिम युवाओं पर हो रहा है। आंकड़े बताते हैं कि सीमा पार से प्रायोजित आतंकी हमलों से भारत में जितने लोग हताहत हुए हैं उससे लगभग 80 गुना अधिक पाकिस्तान इसका शिकार हुआ है। आतंकवाद को पोषित करने के कारण पाकिस्तान को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। भारत की इस सर्जिकल स्ट्राइक के दो बड़े असर भविष्य में देखने को मिलेंगे। पहला, घाटी के पाकिस्तान परस्त तत्वों को सीमा पार से धन, हथियार और प्रशिक्षित आतंकियों का समर्थन मिलना अधिकांश भागों में कम हो जाएगा। दूसरा, घाटी में सुरक्षा बलों के साथ-साथ राष्ट्रवादी ताकतों का मनोबल बढ़ेगा और अलगाववादी शक्तियों के हौसले पस्त पड़ जाएंगे? ❖ **साभार: दैनिक जागरण**

सर्वविदित है कि पाकिस्तान में जनता द्वारा चुनी हुई सरकार का कोई वर्चस्व नहीं है। वहां की वास्तविक शक्तियां मजहबी जुनून से प्रेरित सेना और कट्टरपंथियों के हाथों में है। पाकिस्तान के पूर्व राजनयिक हुसैन हक्कानी की पुस्तक 'बिटवीन द मॉस्क एंड द मिलिट्री' में पाकिस्तानी सैन्य-मुल्लाओं के विषाक्त संयोजन का विस्तार से विवरण है। हक्कानी की पुस्तक के अतिरिक्त पश्चिमी देशों ने भी पाकिस्तान की विषाक्त मानसिकता का अध्ययन किया है। वह सभी बिना किसी अपवाद के इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि पाकिस्तान के मूल अस्तित्व और वहां के सत्ता अधिष्ठानों का निशाना केवल भारत ही है, जो विश्व में एक सफल लोकतांत्रिक राष्ट्र है और जिसे वैश्विक निवेश के लिए सबसे उपयुक्त स्थान के रूप में देखा जा रहा है। ❖

सैनिकों के बलिदान का हो सम्मान

- नीतू वर्मा

पठानकोट, पाम्पोर, उरी, बारामूला और हन्दवाड़ा ऐसे नाम हैं जो 2016 में भारतीय सेना पर पाकिस्तान द्वारा किये गये हमलों को ब्यान करते हैं। भारतीय सेना द्वारा आतंकी बुहरान वानी को मार गिराये जाने के पश्चात् कश्मीर के अशान्त माहौल के बीच जब उरी में भारतीय सेना पर हमला हुआ, तो उस हमले में भारत ने अपने 18 जवानों को खो दिया। ये जवान किसी बेकसूर को सताने के उद्देश्य से नहीं बल्कि करोड़ों भारतीयों की रक्षा के लिए तैनात थे।

यदि इतने हमले झेलने के बाद भी भारतीय सेना शांत बैठती तो इन हमलों में शहीद हुए वीर सैनिकों की कुर्बानी भी बेकार जाती। इन हमलों का जवाब देने के लिए भारतीय सेना ने 28 और 29 सितम्बर की रात को आतंकवादियों के ठिकानों पर सर्जिकल स्ट्राइक किया।

सर्जिकल अटैक का अर्थ है, एक विशिष्ट जगह पर नियंत्रित हमला, इस हमले में सब कुछ पहले से ही तय होता है, कि किस स्थान पर हमला करना है और किस तरह पूरे कार्यक्रम को अंजाम देना है। आखिर में खुद को बचाकर बिना कोई सबूत छोड़े वापस आना होता है। इस प्रकार के हमले में दुश्मन को इस बारे कोई अन्देशा नहीं होता।

इन हमलों के बाद देश का प्रत्येक वर्ग भारतीय सेना के साथ खड़ा पाया गया और सेना के इस गौरवान्वित करने वाले कारनामे से फूला नहीं समाया। देश की राजनीतिक पार्टियों ने भी इसका पूरज़ोर समर्थन किया। किन्तु दुखद विषय यह रहा कि हमले के कुछ दिनों बाद ही विभिन्न विपक्षी राजनीतिक दलों ने जो ब्यान दिये वो गैर ज़िम्मेदाराना और देश के वीर सैनिकों का मनोबल गिराने वाले थे। बेहद शर्मनाक बात यह रही कि कुछ नेताओं ने तो सर्जिकल स्ट्राइक की सत्यता पर भी प्रश्नचिन्ह लगा दिये और देश के सामने सबूत रखने को कहा।

इन ब्यानों के पीछे जो मंशा नज़र आई वह यही, कि देश को गौरवान्वित करने वाले इस कार्य का श्रेय कहीं सत्तासीन सरकार को न मिल जाए। लेकिन इस तुच्छ राजनीतिक लाभ को साधने के लिए भारतीय सेना को कटघरे में खड़ा करना कहां तक सही है ये सोचने और चिन्ता का विषय है।

देश पर हमला करने वाले आतंकियों से बदला लेने वाले सैनिकों पर किसे गर्व नहीं होगा। हमारे देश को पिछले कई वर्षों में कई आतंकवादी हमलों ने ज़ख्म दिए हैं। लेकिन भारत का सब्र तब टूटा जब 18 सितम्बर को उरी में आतंकियों द्वारा किये गए हमले में देश के 18 जवान शहीद हुए। देश की सेवा के लिए तैनात सैनिकों के कफन में लिपटे शवों को देख उनके परिजनों की अपने बच्चों से मिलने की उम्मीदें भी दफन हो गई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा इन जवानों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा और हुआ भी यही। भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक कर ये साबित कर दिया कि भारत आंतकी हमलों को नहीं सहेगा बल्कि उनका मुंह तोड़ जवाब दिया जाएगा। भारत ने 1971 के बाद नियंत्रण रेखा के पार पाकिस्तान के नाज़ायज़ कब्जे वाले कश्मीर में पंहुचकर आंतकवादियों को ध्वस्त किया।

आंतकियों को जवाब देने की ये दृढ़ इच्छाशक्ति, भारतीय सेना के स्पेशल कमान्डोज़ की सटीक सैन्य कार्यवाही ने न सिर्फ आतंकवादियों को बल्कि आतंकियों का आर्थिक संरक्षण करने वालों, उनका पालन-पोषण करने वाले पनाहगाहों को एक करारा जवाब भी था।

भारतीय सेना द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइट से बौखलाया पाकिस्तान तो लोगों को गुमराह करने के लिए उल्टी-सीधी ब्यानबाज़ी कर ही रहा था, शर्मनाक बात तो ये रही कि अपने ही देश के राजनीतिज्ञों ने अपने ही सैनिकों से सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांगकर सैनिकों के मनोबल और आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाई। खुद को बुद्धिजीवी मानने वाले इन लोगों का कहना था कि जब तक सबूत नहीं मिलते तब तक सर्जिकल स्ट्राइक पर भरोसा नहीं किया जाएगा।

पाकिस्तान की भाषा बोल कर इन नेताओं ने अपने ही देश के शहीदों की शहादत का मज़ाक उड़ाया है। क्यों सेना पर सवाल उठाकर सेना के शौर्य को शक की निगाहों से देखा जा रहा है? अपना परिवार, अपना घर बार छोड़ कर हमारी

सुरक्षा में, हमारे परिवार की रक्षा के लिए ये सैनिक दिन रात डटे रहते हैं, उनकी विश्वसनीयता पर सवाल उठा कर सैनिकों के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाई गई है। विभिन्न न्यूज़ चैनलों पर ऐसे लोग वाद-विवाद के कार्यक्रमों में भाग लेकर सर्जिकल स्ट्राइक पर तथ्यहीन ब्यानबाजी कर रहे हैं जो खुद भी नहीं जानते कि आखिर वास्तव में सर्जिकल स्ट्राइक है क्या। अपने लहू से जो वर्दी देश के तिरंगे को सींचती आई है, उन फौजियों के नाम पर, उनकी शहादत पर राजनीति करने से भी इन तुच्छ राजनीतिज्ञों को कोई गुरेज़ नहीं है। बहुत ही शर्म की बात है कि सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के बजाए, उनकी लाशों पर राजनीतिक रोटियां सेकी जा रही हैं। जब जब देश को जरूरत पड़ी तब-तब हमारे फौजियों ने पूरे समर्पण के साथ, पूरी हिम्मत के साथ हमें दुश्मनों से बचाया है, देश के मान-सम्मान की हिफाज़त की है। सैनिकों के चरित्र पर सवाल उठाने वाले लोग ये कैसे भूल सकते हैं कि हमारे देश की सेना ही है जिसकी वजह से भारत की आज़ादी आज भी बरकरार है।

पाकिस्तान तो इसी ताक में है कि किसी न किसी तरह वह हमारी आर्मी के राज़ जान पाए। लेकिन हमारे राजनीतिज्ञ क्यों ये बात नहीं समझ पा रहे कि सर्जिकल स्ट्राइक से जुड़े तथ्यों को सार्वजनिक नहीं किया जा सकता अर्थात कुछ बातों को देश के हित के लिए गोपनीय रखना जरूरी है।

हमारे देश में धर्म, जाति, के नाम पर तो पहले ही सियासत होती रही है, लेकिन अब सैनिकों के बलिदान पर राजनीति कर देश को बांटने का प्रयास किया जा रहा है। सर्जिकल स्ट्राइक के प्रूफ मांगकर न केवल सैनिकों की वीरता बल्कि उनके परिवारजनों की भावनाओं और देश के आत्मसम्मान पर चोट की गई है।

हमारे देश की सेना, हमारे जांबाज़ बेदाग, साफ पाक है पूरे समर्पण के साथ अपने कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं। इन्हें न तो अपनी बहादुरी के सबूत देने की आवश्यकता है, और न ही इस पर राजनीति की जानी चाहिए। सर्जिकल स्ट्राइक के बाद भी हमारे देश में आतंकी हमले जारी हैं, लेकिन देश की सेना इसी बहादुरी और पूरे समर्पण के साथ हमारे लिए ढाल बनकर खड़ी है, ताकि देश के करोड़ों देशवासी चैन की नींद सो पाएं। हमें इस कुत्सित राजनीति को छोड़कर अपनी सेना के साथ खड़े होना चाहिए। अपनी ही सेना के खिलाफ बयानबाज़ी कर रहे, राजनीतिज्ञों को इस विषय पर राजनीति बन्द करनी चाहिए। यदि वे देश की रक्षा में अपना सहयोग नहीं दे सकते तो कम से कम इस तरह की बेतुकी बातें कर देश के वीरों और देश के सम्मान पर उंगली न उठाएं। सेना को अपना काम करने दें, उसका समर्थन करें, उनका हौंसला बढ़ाएं और उनके बलिदान का सम्मान किया जाए। ❖

अजीत डोभाल की शानदार स्पीच

इस दुनिया में सबसे बड़ी अदालत इतिहास की है, कोर्ट में क्या हुआ, हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट में क्या हुआ, युद्ध में क्या हुआ, इलेक्शन में क्या हुआ इन सबका कोई मूल्य नहीं है, मूल्य है तो सिर्फ इस बात का कि इतिहास में क्या लिखा जाएगा???और, यदि आप इतिहास उठा कर देखें तो आपको पता चलेगा कि इतिहास ने कभी उसका साथ नहीं दिया जो न्यायसंगत था, इतिहास ने कभी उसका साथ नहीं दिया जो शांतिप्रिय था, अपितु इतिहास की अदालत में सदैव वही विजयी हुआ है जो शक्तिशाली था।

यदि इतिहास न्यायसंगत लोगों का साथ देता तो आज दिल्ली में बाबर रोड़ है, परन्तु राणा सांगा रोड़ नहीं क्यों, क्योंकि बाबर आया और उसने राणा सांगा को हरा दिया, भले ही राणा सांगा सही थे, न्यायसंगत थे परन्तु आज इतिहास ने उन्हें भुला दिया है।

हमारे हजारों वर्ष के इतिहास में हमने कभी किसी पर आक्रमण नहीं किया, किसी अन्य धर्म को आहत नहीं किया, कभी भी हमने अन्य धर्म के धार्मिक स्थलों को नहीं तोड़ा, परन्तु इतिहास में जिस भारतवर्ष की सीमाएं अफगानिस्तान-ईरान तक थी आज सिकुड़कर यहां तक पहुंच गयी हैं।

हम न्यायसंगत थे, हम शांतिप्रिय थे, हम मानवता में विश्वास करते थे, परन्तु इतिहास ने हमें सजा दी, सजा इस बात की कि हमने अपनी शक्तियों का प्रयोग नहीं किया।

यदि विदेशी आक्रांताओं की शक्ति और उस समय भारतवर्ष की शक्ति का अनुपात निकाला जाए तो 1रू 1000 का अनुपात भी नहीं था, फिर भी हम पर विदेशियों ने शासन किया, और न सिर्फ शासन किया वरन् जब उनका मन भर गया और वे जाने लगे तो यहां की सत्ता अपने गुलामों को सौंप गए, और तब भारत में गुलाम वंश का उदय हुआ।

इतिहास ने हमें सिर्फ इस बात की सजा दी कि हमने राष्ट्रहित से आगे अपने आदर्शों को रखा, यदि कभी conflict of interest हो तो आदर्शों से पहले राष्ट्रहित को रखें, अर्थात राष्ट्रहित में यदि कोई अनैतिक कार्य भी करना पड़े तो करें, यदि हिंसा करनी पड़े तो हिंसा करें कदापि पीछे न हटें.. ❖ **साभार सोशल मीडिया**

दूसरे के कष्टों को अपनाना ही सच्ची मानवता : आचार्य देवव्रत

भगवान वाल्मीकि के प्रकटोत्सव पर डॉ. हेडगेवार स्मारक समिति शिमला द्वारा शिमला के ऐतिहासिक रिज मैदान पर रक्त गट जांच एवं रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का शुभारंभ राज्यपाल आचार्य देवव्रत द्वारा किया गया। इस शिविर में 103 लोगों ने रक्तदान किया। अपने उद्घाटन उद्बोधन में राज्यपाल ने कहा कि वेदों में लिखा है कि जो लोग दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख अनुभव करते हैं और इस विवेक से काम करते हैं वही सच्चे अर्थों में मानवता का भला कर सकते हैं। रक्तदान से बढ़कर कोई दान नहीं है क्योंकि रक्त के कणों से किसी के जीवन को बचाया जा सकता है। भगवान वाल्मीकि के प्रकटोत्सव पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि जो राम का आदर्श और हमेशा प्रासंगिक रहने वाला चरित्र समाज को दिया वह आज भी जीवंत है और हर युग में प्रासंगिक है। राम जैसा कोई बेटा, पिता, पति और राष्ट्रभक्त हो नहीं सकता। भगवान राम के आदर्श को बिना वाल्मीकि की लेखनी के नहीं समझा जा सकता था। समरसता का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि आज यह दुर्भाग्य की बात है कि समाज की रचना में परिवर्तन आया है और उंच-नीच की प्रवृत्तियां समाज में फैली हैं जिससे समाज में वर्ग संघर्ष पैदा हुआ है। वेदों में भी कर्म के आधार पर ही वर्ण व्यवस्था का जिक्र है न कि जन्म के आधार पर। भ्रूणहत्या पर बोलते हुए आचार्य देवव्रत का कहना था कि आज समाज में बेटी और बेटे में अंतर के कारण भ्रूण हत्या जैसी प्रवृत्ति को पैर पसारने का मौका मिला है और बाद में जाकर यह दहेज जैसी बुराई में तब्दील हो जाती है। ऐसे में आज हर मंच पर बेटे और बेटी को एकसमान मानकर समाज के चिंतन में बदलाव की जरूरत है ताकि यह असमानता दूर हो सके। इस अवसर पर हेडगेवार स्मारक समिति के अध्यक्ष बोधराज शर्मा ने सभी का धन्यवाद किया। रक्तदान के संचालन के लिए आईजीएमसी शिमला से आये डॉ. संदीप मल्होत्रा, तकनीकी सहायक राजेश भारद्वाज, रोहित और नर्सिंग स्टाफ से प्रतिमा और निशिता ने भाग लिया। रक्त गट जांच में भारत विकास परिषद ने सहयोग किया और 54 नये लोगों को जोड़कर उनसे रक्तगट जांच करवाया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हि0प्र0 के सह प्रांत संघचालक डॉ. वीरसिंह रांगड़ा और वाल्मीकि सभा के सदस्य जसवंत राय, समिति के सदस्यों सहित शिमला शहर के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।❖

एस.वी.एम. करसोग के खिलाड़ियों का उत्तर भारत खो-खो खेलों के लिए चयन

स्थानीय सरस्वती विद्या मंदिर के होनहार खिलाड़ियों ने एक बार फिर पाठशाला ओर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। एसवीएम के खिलाड़ियों ने उत्तर भारत अंडर-17 की खेलों के दौरान खो-खो के लिए प्रथम स्थान प्राप्त किया है, जिसको लेकर पूरे क्षेत्र में खुशी की लहर है। सरस्वती विद्या मंदिर करसोग के प्रधानाचार्य लेख राज ठाकुर ने बताया कि प्रदेश शिक्षा समिति की ओर से

संचालित सरस्वती विद्या मंदिर करसोग के खिलाड़ी शारीरिक शिक्षक रजनीश कुमार के नेतृत्व में उत्तर भारत की खेलों में भाग लेने पंजाब के मंरिडा गए, जहां उन्होंने अपनी प्रतिभा दिखाते हुए खो-खो में प्रथम स्थान पर अपना नाम दर्ज करवाया है एवं हिमाचल शिक्षा समिति का गौरव भी बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि करसोग क्षेत्र के लिए बहुत बड़े गौरव की बात है कि पूरे प्रदेश में सरस्वती विद्या मंदिर करसोग को हिमाचल की ओर से नेतृत्व करने का अवसर मिला है। इससे पहले सरस्वती विद्या मंदिर करसोग की तीन छात्राएं कबड्डी खेल में राष्ट्रीय स्तर तक खेल कर अपना दबदबा बना चुकी हैं। सरस्वती विद्या मंदिर करसोग के प्रधानाचार्य लेख राज ठाकुर ने कहा कि अब उत्तर भारत में खो-खो के प्रथम स्थान पाने के बाद उत्तर क्षेत्र का नेतृत्व करते हुए करसोग के होनहार खिलाड़ी अखिल भारतीय स्तर की खेलों में भाग लेने गाजियाबाद रवाना होंगे।❖

सरस्वती विद्या मन्दिर बद्दी में ज़िला स्तरीय ज्ञान विज्ञान मेला सम्पन्न।

सरस्वती विद्या मंदिरों का ज़िला स्तरीय ज्ञान विज्ञान मेला सरस्वती विद्या मंदिर बद्दी में सम्पन्न हुआ विज्ञान मेले में तीन संकुलों के 16 विद्यालयों के 9 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। ज्ञान विज्ञान मेले के प्रभारी एवं सरस्वती विद्या मन्दिर के प्रधानाचार्य गणेश दत्त शर्मा ने बताया कि विज्ञान मेले में 4 प्रकार की प्रतियोगिताएं हुई, जिसमें विज्ञान प्रश्न मंच, संस्कृति प्रश्न मंच, पत्र वाचन व विज्ञान प्रदर्श(मॉडल) प्रस्तुत किए गए।❖

स्वदेशी जागरण मंच ने जलाया चीनी माल

ठियोग के सुभाष चौक पर चाईनीज सामान का बहिष्कार करने के लिए चीनी उत्पादों को जलाया गया। इस माल में सभी प्रकार की चीनी वस्तुयें शामिल रहीं जिनमें सबसे उल्लेखनीय चाईनीज मोबाईल भी शामिल थे। यह कार्यक्रम स्वदेशी जागरण मंच की अगुवाई में किया गया। कार्यक्रम की अगुवाई स्वदेशी जागरण मंच के जिला संयोजक अंकित वर्मा ने की। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को शपथ भी दिलवायी गयी कि वे भविष्य में चीनी वस्तुओं का उपयोग नहीं करेंगे। कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए अंकित वर्मा ने बताया कि आज पूरा विश्व जान गया है कि चीन पाकिस्तान जैसे आंतकवादी देश को अपना समर्थन दे रहा है। जहां एक ओर विश्व के देश आतंक के खिलाफ मोर्चे पर एकजुट दिखाई देते हैं वहीं चीन जैसे देश आंतवादियों के प्रति अपना समर्थन प्रदान करते हैं। ❖

हिमाचल शिक्षा समिति द्वारा संचालित विद्यालयों का प्रान्त स्तरीय विज्ञान मेला हिमरश्मि विद्या मंदिर विकासनगर, शिमला में 21, 22, 23 अक्तूबर को आयोजित किया गया। प्रांत स्तर पर हो रहे इस मेले में 125 विज्ञान विषयों के मॉडल बाल वैज्ञानिकों द्वारा बनाए गए हैं। इस अवसर पर मुख्यातिथि प्रो. के.सी. शर्मा तथा शिक्षा समिति के कार्यकर्ता उपस्थित हुए। इस विज्ञान मेले में 398 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।❖

गुरू नानक देव

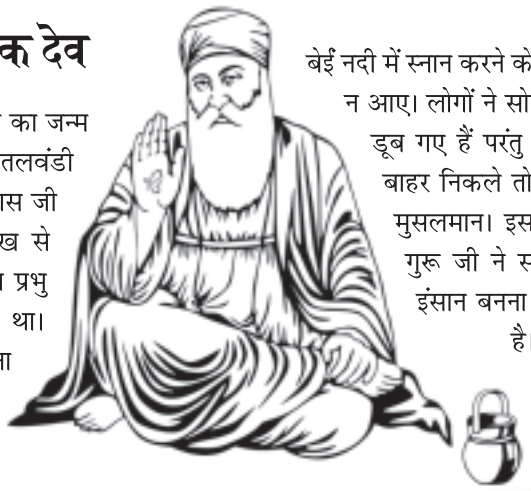

श्री गुरू नानक देव जी का जन्म कार्तिक पूर्णिमा को राय भोए की तलवंडी में 1469 ई. में मेहता कल्याण दास जी के घर माता तृप्ता जी की कोख से हुआ। बचपन से ही आपका मन प्रभु की भक्ति में लीन रहता था। जरूरतमंद लोगों की मदद करना आपकी आदत बन गई थी। आपको पढ़ने के लिए पंडित जी तथा मौलवी साहिब के पास भेजा गया, ताकि आप वैदिक, गणित व अन्य ज्ञान सीख सकें और मौलवी जी से फारसी तथा इस्लामिक साहित्य का अध्ययन कर सकें। गुरू जी बचपन से ही संत-महापुरूषों की संगत करते रहते थे। 9 वर्ष की आयु में जब गुरू जी को जनेऊ पहनने को कहा गया तो आपने यह कहकर मना कर दिया कि उन्हें तो ऐसा जनेऊ पहनाया जाए, जो न तो कभी टूट सके तथा न ही गंदा हो सके और न ही अग्नि उसे जला सके। यह सुनकर सभी दंग रह गए और गुरू जी से ही पूछा ऐसा जनेऊ कहां से मिलेगा, तो गुरू जी ने उत्तर दिया,

''दया कपाह, संतोख सूत, जत गंढी सत वट।।
इह जनेऊ जीय का हई त पांडे घत।।
न इह तुटै न मल लगै, न इह जलै, न जाए।।
धन सु माणस नानका जिन गल चला पाए।।''

इसके बाद जब गुरू जी कुछ और बड़े हुए तो उन्हें कारोबार सिखाने के लिए 20 रूपए देकर कुछ सामान खरीदने के लिए भेजा गया ताकि उस सामान को अधिक मूल्य पर बेच कर मुनाफा कमाया जा सके, परंतु गुरू जी ने गांव चूहड़काना में कई दिनों से भूखे-प्यासे बैठे संत-महापुरूषों को इन 20 रूपयों का भोजन खिलाया तथा कहा कि यह सच्चा सौदा है। जब गुरू जी घर पहुंचे तो उनके पिता जी उन पर बहुत नाराज हुए परंतु गुरू जी कोई साधारण पुरूष नहीं, बल्कि भगवान ने उन्हें किसी विशेष कार्य के लिए भेजा था। जो भी जरूरतमंद आप जी के पास आता आप उसे भोजन या राशन दे देते थे। गुरू नानक देव जी इस दुनिया पर भूले-भटके लोगों को सत्य का मार्ग दिखलाने आए थे। अपने मिशन को वह पूरे देश-विदेश का भ्रमण करके ही पूरा कर सकते थे। इसी आशा को लेकर आप नित्य की तरह सुल्तानपुर के निकट से बहती बेईं नदी में स्नान करने के लिए गए और तीन दिन तक बाहर न आए। लोगों ने सोचा कि गुरू नानक देव जी नदी में डूब गए हैं परंतु तीसरे दिन आप जी जब नदी से बाहर निकले तो आपने कहा कि न कोई हिन्दू न मुसलमान। इस पर विवाद खड़ा हो गया, परंतु गुरू जी ने सभी को समझाया कि मनुष्य को इंसान बनना है, इंसानियत ही सबसे बड़ा धर्म है। अपने मिशन को पूरा करने के लिए गुरू जी ने चारों दिशाओं में चार लंबी यात्राएं कीं जिन्हें चार उदासियां कहा जाता है। इन चार यात्राओं में गुरू जी ने देश-विदेश का भ्रमण किया तथा लोगों को सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। कोड्डा राक्षस तथा सज्जन ठग जैसे लोग गुरू जी की प्रेरणा से सत्यमार्गी बने। गुरू जी ने पहाड़ों में बैठे योगियों तथा सिद्धों के साथ भी वार्ताएं कीं तथा उन्हें दुनिया में जाकर लोगों को परमात्मा के साथ जोड़ने तथा प्रेरित करने के लिए उत्साहित किया। आप जी ने गृहस्थ-मार्ग को सर्वोत्तम माना तथा स्वयं भी गृहस्थ जीवन व्यतीत किया। आप जी की शादी पक्खो की रंधावा (गुरदासपुर) के पटवारी मूला चोणा की सुपुत्री सुलक्षणी जी से मूला जी के पैतृक गांव बटाला में हुई। आप जी के दो पुत्र बाबा श्री चंद तथा बाबा लक्ष्मी दास जी थे। भाई गुरदास जी के अनुसार गुरू नानक देव जी अपनी यात्राएं (उदासियां) पूरी करने के बाद करतारपुर साहिब आ गए। उन्होंने उदासियों का भेस उतारकर संसारी वस्त्र धारण कर लिए। सत्संग प्रतिदिन होने लगा। भाई गुरदास जी के शब्दों में:-

''ज्ञान गोष्ठ चर्चा सदा, अनहद शब्द उठै धुनिकारा।।
सोदर आरती गावीऐ, अमृत वेलै जाप उचारा।।''

गुरू जी स्वयं खेतीबाड़ी का काम करने लगे तथा दूर-दूर से लोग उन के पास धर्म कल्याण के लिए आने लगे। यहां भाई लहणा जी गुरू जी के दर्शनों के लिए आए गुरू जी के ही होकर रह गए। आप जी ने अपने पुत्रों को गुरू गद्दी नहीं दी, बल्कि त्याग, आज्ञाकारी एवं सेवा की मूर्त भाई लहणा जी की कई कठिन परीक्षाएं लेने के बाद हर तरह से उन्हें गुरू गद्दी के योग्य पाकर उन्हें गुरू गद्दी सौंप दी और उनका नाम गुरू अंगद देव जी रखा। गुरू नानक देव जी 1539 ई. में करतारपुर साहिब में ज्योति-ज्योत समा गए।❖

इसरो ने अंतरिक्ष में लगाई सबसे ऊंची छलांग

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने 27 सितम्बर 2016 को अपने सबसे लंबे मिशन को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। इस मिशन में देश के सबसे अहम प्रक्षेपण यान पीएसएलवी ने सोमवार को आठ उपग्रहों का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण करने के बाद उन्हें दो अलग-अलग कक्षाओं में स्थापित कर दिया। इन आठ उपग्रहों में भारत का एक मौसम उपग्रह स्कैटसैट-1 और अन्य देशों के पांच उपग्रह भी शामिल हैं। इन उपग्रहों को दो अलग-अलग कक्षाओं में प्रवेश करवाने के लिए चार चरण वाले पीएसएलवी सी-35 के इंजन को दो बार री-स्टार्ट किया गया। सबसे पहले 371 किलोग्राम वजन वाले प्राथमिक उपग्रह स्कैटसैट-1 को 'पोलर सनसिन्क्रोनस ऑर्बिट' में प्रवेश कराया गया। इसरो ने कहा कि स्कैटसैट-1 मौसम की भविष्यवाणी, चक्रवात की पहचान से जुड़ी सेवाओं के लिए हवा की दिशा से जुड़ी जानकारी उपलब्ध करवाने वाले ओशियनसैट-2 के स्कैट्रोमीटर का एक सतत अभियान है। उपग्रह के अभियान की कुल अवधि पांच साल है

स्कैटसैट.1 के अलावा जिन उपग्रहों को कक्षा में प्रवेश कराया गया, उनमें आईआईटी बॉम्बे का प्रथम और बीईएस यूनिवर्सिटी, बंगलूरू और उसके संघ का पीआईसैट, अल्जीरिया के तीन उपग्रह- अलसैट-बी, अलसैट-2बी और अलसैट-1एन, अमेरिका का उपग्रह-पाथफाइंडर-1 और कनाडा का उपग्रह- एनएलएस-19 शामिल थे।

अधिक प्रक्षेपण पर ध्यान

इसरो अगले महीन फ्रेंच गुयाना से संचार उपग्रह के प्रक्षेपण के साथ अधिक प्रक्षेपण करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। इसरो के अध्यक्ष ने कहा कि हम आने वाले समय में अगले महीने फ्रेंच गुयाना से संचार उपग्रह जीसैट 18 के साथ ही कई उपग्रहों का प्रक्षेपण करेंगे।

देश के लिए गर्व का क्षण

इसरों के वैज्ञानिकों के 'नवोन्मेषी उत्साह' ने दुनिया भर में भारत को गौरवान्वित किया है। यह भारत के लिए अत्यंत प्रसन्नता एवं गर्व का क्षण है। स्कैटसैट-1 और सात अन्य उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण के लिए इसरो को बधाई। ❖

बी.एस.एफ. के 1500 वीर जवान करेंगे अंगदान

देश की सुरक्षा करने वाले वीर जवान अब मृत्यु पश्चात भी मानवता की सेवा करेंगे। सीमा सुरक्षा बल (बी.एस.एफ.) ने राष्ट्रीय अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (एन.ओ.टी.टी.ओ.) के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम में अपने अंगों का दान देने की वचनबद्धता के साथ केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जे.पी. नड्डा को 1500 प्रमाण पत्र सौंपे। इस अवसर पर नड्डा ने कहा कि बी.एस.एफ. द्वारा की गई शानदार पहल अंगदान के बारे में जागरूकता फैलाने की दिशा में एक लंबा मार्ग तय करेगी। नड्डा ने कहा, ''भारत की अग्रिम रक्षा पंक्ति में तैनात, सीमा सुरक्षा बल पिछले 50 वर्षों से हमारी सीमाओं की सुरक्षा कर राष्ट्र की सेवा में यह अत्यंत सराहनीय कार्य कर रहा है और अब उनके द्वारा अंगों का दान एक नये जीवन का उपहार देने के समान है। अंग एक राष्ट्रीय संसाधन है और इसलिए एक भी अंग बर्बाद नहीं किया जाना चाहिए।'' उन्होंने सभी भारतीयों से मृत्यु के पश्चात् अंग दान करने की शपथ लेने और बहुत से मूल्यवान जिन्दगियों को बचाने का आह्वान किया। ❖

साभार: बिरसा हुंकार

कार्बन उत्सर्जन कम करने में छत्तीसगढ़ कामयाब

प्रदूषण रोकने के लिए किए जा रहे उपायों के बीच छत्तीसगढ़ कार्बन उत्सर्जन कम करने में कामयाब हो गया है। छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य है जिसने 6 माह के भीतर ही कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने का कारनामा किया है। जलवायु सम्मेलन में जोर-शोर से कार्बन उत्सर्जन का मुद्दा उठने के बाद केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने सभी राज्यों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए थे। सभी को अपने-अपने स्तर पर कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के ठोस उपाय करने को कहा था। केंद्र के निर्देश के परिपालन में छत्तीसगढ़ ने कार्बन उत्सर्जन रोकने के उपाय किए। परिणामस्वरूप 6 माह के भीतर ही कार्बन उत्सर्जन को कमी लाने में सफलता अर्जित की। हाल ही में केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय द्वारा जारी रिपोर्ट के मुताबिक 6 माह में कार्बन उत्सर्जन कम करने वाला छत्तीसगढ़ पहला राज्य बन गया है। केन्द्र के अनुसार छत्तीसगढ़ को इस दिशा में लगातार काम करते रहना होगा ताकि कार्बन उत्सर्जन में और भी कमी आ सके। प्रदूषण को लेकर रायपुर की विश्व में हुई किरकिरी के बाद राज्य के पर्यावरण विभाग ने प्रदूषण रोकने ठोस कार्ययोजना तैयार की। इसके अनुसार प्रदूषण की रोकथाम के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे है। औद्योगिक क्षेत्र में प्रदूषण फैलाने की शिकायतें मिलने पर तत्काल कार्रवाई की जा रही है। ❖

राफेल लड़ाकू विमान निर्माण से जुड़ा रिलायंस

भारतीय वायुसेना को अत्याधुनिक लड़ाकू विमान देने की रफ्तार तेज कर रही फ्रांसीसी एविएशन कंपनी दासौ के साथ अनिल अंबानी का एडीए समूह अहम किरदार निभाएगा। वह रफेल लड़ाकू विमानों के निर्माण में सहयोग करेगा। इनके निर्माण से रिलायंस को जोड़ने के लिए दासौ ने उसके साथ मिलकर दासौ-रिलायंस एयरोस्पेस नाम से संयुक्त उद्यम के गठन का एलान किया है।

देश के रक्षा क्षेत्र में निजी क्षेत्र की अब तक की सबसे बड़ी साझेदारी को हकीकत में तब्दील करने की दासौ और रिलांयस ने सोमवार को संयुक्त घोषणा कर भी दी। एडीए ग्रुप के चैयरमैन अनिल अंबानी और दासौ एवएिशन के चेयरमैन व सीईओ एरिक ट्रैपियर ने क्रमशः मुंबई और पेरिस में इसका एलान किया। अनिल अंबानी समूह की ओर से इस संयुक्त उद्यम को लेकर जारी बयान में कहा गया है कि दासौ-रिलायंस एयरोस्पेस का राफेल विमान सौदे के आफॅसेट समझौते के कार्यान्वयन में मुख्य किरदार होगा। भारत के साथ करीब 60 हजार करोड़ रूपये के 36 राफेल विमानों के सौदे में से 50 फीसद रकम ऑफसेट समझौते के तहत खर्च करनी होगी। इस ऑफसेट समझौते में भी 74 फीसद यानी करीब 22 हजार करोड़ रूपये दासौ को राफेल से जुड़े निर्माण पर भारत में खर्च करनी होगी। दासौ-रिलायंस का संयुक्त उद्यम इस लिहाज से बेहद अहम रणनीतिक रक्षा सहयोग होगा। एडीए समूह के अनुसार यह संयुक्त उद्यम प्रधानमंत्री के मेक इन इंडिया और स्किल इंडिया अभियान को आगे बढ़ाएगा। ❖

नफरत फैलाने वाले मदरसों को बंद कर देना चाहिएः तारेक फतेह

पाकिस्तान के वरिष्ठ पत्रकार तारिक फतेह ने बयान दिया है कि मदरसे हिन्दुस्तान में नफरत फैला रहे हैं। फतेह का बयान इसलिए भी बड़ा कहा जा रहा है क्योंकि वह एक मुसलमान है और पाकिस्तान से ताल्लुक रखते हैं। गौरतलब है कि तारिक फतेह जी न्यूज के प्रोग्राम "ताल ठोक के'' में पैनल डिस्कशन कर रहे थे। प्रोग्राम में आज मदरसों द्वारा ''मिड डे मील'' का बहिष्कार करने पर बहस चल रही थी। प्रोग्राम के दौरान जी न्यूज के पत्रकार रोहित सरदाना ने तारेक फतेह से सवाल किया कि क्या मदरसों द्वारा मिड डे मील का बहिष्कार करना सही है? जवाब में उन्होंने कहा कि मुसलमानों को अल्पसंख्यकों के रूप में भारत से ज्यादा अधिकार किसी देश में नहीं दिया गया है। उन्होंने कहा कि मदरसों में ये सिखाया जाता है कि इस्लाम सबसे बड़ा धर्म है और बाकी सब धर्म बेकार है। मदरसे हिंदुस्तान में सिर्फ नफरत फैलाने का काम कर रहे हैं और इन्हें हिन्दुस्तान में जल्द से जल्द बंद करवा देना चाहिये। स्मरण रहे कि हाल में मध्य प्रदेश के कुछ मदरसों ने मिड डे मील का बहिस्कार किया था उनका तर्क था कि बनाने के बाद हिन्दू रीति रिवाजों द्वारा इसका भोग लगाया जाता है।❖

ग्लोबल वार्मिंग से परागण प्रक्रिया पर भी पड़ रहा है प्रभाव
समय से 15 दिन पहले पक रहीं फसलें

ग्लोबल वार्मिंग से प्रदेश में हर साल 0.6 डिग्री सेल्सियस की दर से तापमान बढ़ रहा है, बारिश कम हो रही है, 17 दिन पहले ही फसलें तैयार हो रही हैं। इतना ही नहीं फसलों की पैदावार के कारण परागण प्रक्रिया पर भी इसका प्रभाव पड़ रहा है। यह बात पालमपुर कृषि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रणबीर सिंह राणा ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला पंथाघाटी में जलवायु परिवर्तन अनुकूल विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में प्रस्तुत व्याख्यान में कही।

उन्होंने बताया कि पर्यावरण में कार्वन डाईआक्साइड गैस के बढ़ने से 1 से 2 फीसदी तापमान बढ़ रहा है। पानी में 40 फीसदी की कमी आ रही है। प्रधान मुख्य अरण्यपाल आरके गुप्ता ने बताया कि जलवायु परिवर्तन का वानिकी पारिस्थितिकी तंत्र पर बुरा प्रभाव पड़ने के कारण कई वन्य प्रजातियां लुप्त हो रही है। संस्थान के निदेशक डॉ. वीआरआर सिंह ने वैज्ञानिकों को संबोधित किया कि जलवायु परिवर्तन, इसका निवारण व समाधान एक ज्वलंत मुद्दा है और भारत सरकार की ओर से इसके संदर्भ में आठ अभियान शुरू किए गए हैं। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के उप महा निदेशक साइबल दास गुप्ता ने बताया कि परिषद की एक महत्वाकांक्षी योजना सतत भू उपयोग व पारिस्थितिकी प्रबंधन की बढ़ोत्तरी के लिए नीतियां व संस्थागत सुधार हेतु बनाई गई है। परियोजना का मुख्य उद्देश्य देश के विभिन्न राज्यों में जलवायु परिवर्तन, भू प्रबंधन, जैव विविधता से संबंधित विषयों पर बहुआयामी दृष्टिकोण लागू करना है।

कार्यशाला में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के सहायक निदेशक डॉ. टीपी सिंह और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वीआरएस रावत सहित कई वैज्ञानिकों ने अपनी प्रेजेंटेशन रखी।❖

मंडी को देश में स्वच्छता पर मिला पहला पुरस्कार

स्वच्छ भारत मिशन में पहाड़ी राज्यों में ग्रामीण स्वच्छता में मंडी जिले को देश भर में पहला पुरस्कार मिला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय स्वच्छता पुरस्कार कार्यक्रम में यह पुरस्कार दिया। 30 सितम्बर को दिल्ली के विज्ञान भवन में कार्यक्रम हुआ। मंडी के डीसी संदीप कदम और नारी शक्ति महिला मंडल खद्दर की प्रधान कांता देवी ने प्रथम पुरस्कार लिया। इसमें प्रशस्ति पत्र और महात्मा गांधी का स्मृति चिन्ह् दिया गया। कार्यक्रम में जिला मंडी में महिला मंडलों के माध्यम से स्वच्छता के लिए किए गए कार्यों की वीडियो भी दिखाई गई। प्रधानमंत्री ने मंडी में स्वच्छता क्षेत्र में किए कार्यों की भी प्रशंसा की।

स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) में मंडी विकास अभियान के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में हर घर में शौचालय का निर्माण, उसका इस्तेमाल, स्कूल और आंगनबाड़ी केंद्रों तथा सार्वजनिक स्थानों पर शौचालय और घरों से निकलने वाले ठोस और तरल कचरे का प्रबंधन, सोक्ता गड्ढों का निर्माण आदि कार्यों में शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल किया है । इसी साल मई में क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया की टीम में सुंदरनगर, करसोग, द्रंग और सराज विकास खंडों का दौरा किया। हर ब्लॉक से पांच-पांच पंचायतों में जाकर स्वच्छता में किए कार्यों का निरीक्षण किया। इसके बाद अंक दिए गए। जिला मंडी ने स्वच्छता के मानकों को पूरा कर 98.4 अंक लेकर देश में पहला रैंक पाया। दिल्ली के विज्ञान भवन में हुए समारोह में कुल 11 पुरस्कार बांटे गए। मंडी जिला को प्रथम पुरस्कार दिया गया।❖

सफाईगिरी में हिमाचल देश भर में अव्वल

इंडिया टुडे के सर्वे ने बद्दी के केंद्रीय जल शोधक संयंत्र को बेहतर पाया है

हिमाचल प्रदेश के औद्योगिक क्षेत्र बद्दी-बरोटीवाला के उद्योगों के प्रदूषित जल के शोधन के लिए बनाए गए सीईटीपी (केंद्रीय जल शोधक संयंत्र) के कुशल निर्माण के लिए की गई सार्वजनिक निजी भागीदारी को राष्ट्रीय स्तर पर पहले पायदान पर आंका गया है। देश की राजधानी दिल्ली में आयोजित इंडिया टुडे सफाईगिरी राष्ट्रीय स्तर के अवार्ड समारोह के दौरान बद्दी में पीपीपी मोड पर बने प्रोजेक्ट को पहले अवार्ड से सम्मानित किया गया। गौरतलब है कि बद्दी के निकट मलपुर पंचायत में बनाए गए इस प्रोजेक्ट के निर्माण का जिम्मा बीबीएन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन द्वारा गठित एसवीपी ने उद्योग विभाग हिमाचल प्रदेश के साथ मिलकर किया। पर्यावरण सरंक्षण व संवर्द्धन के लिए 62 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित इस प्रोजेक्ट में बद्दी-बरोटीवाला के उद्योगों से निकलने वाले प्रदूषित जल का शोधन होगा, वहीं ट्राइ सिटी बीबीएन में जल प्रदूषण को काफी हद तक कम करने में कामयाबी मिलेगी।

इंडिया टुडे की टीम ने राष्ट्रीय स्तर पर करवाए गए एक सर्वेक्षण में पूरे देश में ऐसे प्रोजेक्टों का गुप्त अवलोकन किया था। इसमें तीन प्रोजेक्ट शार्ट लिस्ट किए गए थे और उसमें बद्दी स्थित सीईटीपी प्लांट भी शामिल था। रविवार रात्रि हुए राष्ट्रीय समारोह में गांधी जयंती पर सफाईगिरी पर आयोजित समारोह में बद्दी इन्फ्रास्ट्रक्चर व उद्योग विभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया।

खचाखच भरे हाल में केंद्रीय मंत्री वेंकैया नायडू व प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री ऐश्वर्या राय बच्चन ने बद्दी इन्फ्रास्ट्रक्चर के सीईओ केआर चंदेल को यह अवार्ड प्रदान किया। इस समारोह में इंडिया टुडे के चीफ अरुण पुरी, गायक हंसराज हंस, मिक्का, हिमेश रेशमिया, रेखा भारद्वाज सरीखी हस्तियां मौजूद थी। बद्दी इन्फ्रा के निदेशक राजेंद्र गुलेरिया ने कहा कि राज्य के इस महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट को सिरे चढ़ाने में राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड का भी अहम योगदान रहा है। ❖

पानी में तैरता पत्थर

ब्यास में मछलियां पकड़ते हुए मछुआरे को नदी में तैरता हुआ पत्थर मिला है। पानी में डालने पर यह पत्थर डूबने के बजाय तैर रहा है। इसका वजन 10 किलो के आसपास है। मछुआरा इसे उठाकर घर ले आया। पत्थर तैरने की बात आग की तरफ फैल गई। अब दूर-दूर से लोग पत्थर को देखने और पूजा-अर्चना के लिए उमड़ रहे हैं। रमेश चंद निवासी बलघार, देहरा, ब्यास नदी में जाल डालकर मछलियां पकड़ रहा था। जाल इकट्ठा करने के लिए वह पानी में उतरा। इस दौरान उसने नदी में तैरता हुआ पत्थर देखा। पहले तो पत्थर देखकर रमेश घबरा गया, लेकिन वह हिम्मत जुटाकर पत्थर के पास गया और इसे उठाया। इसके बाद उसने दोबारा पत्थर को नदी में फेंका, लेकिन पत्थर डूबा नहीं। रमेश चंद पत्थर को घर ले आया और पूजा स्थल में पानी में रखकर इसकी पूजा अर्चना की। जैसे ही लोगों को इसकी भनक लगी तो रमेश के घर लोगों को तांता लग गया। सैकड़ों लोग पत्थर की पूजा-अर्चना करने पहुंच गए। मान्यता है कि इस तरह के पत्थर दक्षिण भारतीय समुद्र तट रामेश्वरम् और श्रीलंका के बीच समुद्र में पाए जाते हैं। त्रेता काल में रामायण में भी ऐसे ही पत्थरों से रामसेतु के निर्माण का जिक्र है। उधर, रमेश चंद का कहना है कि उसने कई बार पत्थर को पानी में डुबोया, लेकिन वह डूबा नहीं। उसने पत्थर को पूजा-अर्चना के लिए घर में रखा हुआ है। अगर ऐसा पत्थर कहीं चर्चा में आया है तो इसकी जांच कराई जाएगी। यह देखा जाएगा कि उसके तैरने का क्या कारण है। ❖ **साभार: अमर उजाला**

हिंदुओं के मुरीद हुए ट्रंप

अमरीका में रिपब्लिकन पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप ने विश्व सभ्यता तथा अमरीका संस्कृति में विलक्षण योगदान के लिए भारतीय समुदाय की प्रशंसा की है। 70 वर्षीय ट्रंप ने इस बात की पुष्टि भी की कि अगले महीने न्यू जर्सी में वह एक भारतीय-अमरीकी समारोह को संबोधित करेंगे, जिसका फायदा इस्लामिक आतंकवाद के दुनिया भर के पीड़ितों को मिलेगा। ट्रंप ने एक वक्तव्य में कहा कि वैश्विक सभ्यता और अमरीकी संस्कृति में हिंदू समुदाय ने असाधारण योगदान दिया है। हम हमारे मुक्त उद्यम, कड़ी मेहनत पारिवारिक मूल्यों और दृढ़ अमरीकी विदेश नीति के साझा मूल्यों को रेखांकित करना चाहते हैं। उन्होंने 24 सेकेंड का एक वीडियो जारी कर भारतीय-अमरीकी समुदाय को 15 अक्तूबर को होने वाले इस अभूतपूर्व कार्यक्रम में शरीक होने के लिए आमंत्रित किया है। ट्रंप के प्रचार अभियान के मुताबिक, दिन भर चलने वाले इस कार्यक्रम में बालीवुड के आला कलाकारों, नर्तकों और गायकों को बुलाया गया है। इनके अलावा हिंदू धार्मिक गुरूओं और समुदाय के नेताओं को भी आमंत्रित किया गया है। आतंकवाद के खिलाफ मानवीय एकता नाम के इस कार्यक्रम का आयोजक रिपब्लिकन हिंदू कोलिशन है, जिसके संस्थापक और प्रमुख भारतीय अमरीकी शैली कुमार हैं। कुमार इलीनॉइस के रहने वाले हैं। राष्ट्रपति पद के लिए पिछले दो चुनाव में यह पहली बार है, जब किसी उम्मीदवार ने भारतीय अमरीकी सार्वजनिक कार्यक्रम में शरीक होना स्वीकार किया है।

❖ साभार: दिव्य हिमाचल

आईआईटी में होगी संस्कृत की पढ़ाई और शोध

आईआईटी में संस्कृत की पढ़ाई होगी। इतना ही नहीं रिसर्च भी कराया जाएगा। संस्कृत का कोर्स कॅरिकुलअम डिजाइन कर लिया गया है। इसी सिलसिले में पांच अक्तूबर को एकेडमिक सीनेट की मीटिंग भी बुलाई गई है। इसके जरिए आईआईटी कानपुर में पहली भारतीय भाषा की पढ़ाई पर मुहर लगाई जाएगी। अभी

फ्रेंच, जर्मन, स्पैनिश और जापानी भाषा की पढ़ाई कराई जाती है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने संस्कृत को विशेष महत्व देते हुए कहा कि संस्कृत का धार्मिक, पौराणिक इतिहास काफी पुराना है। इसकी पढ़ाई व रिसर्च इंजीनियरिंग और टेक्नोलॉजी के तहत कराने से ऐतिहासिक नतीजे सामने आ सकते हैं। ह्यूमैनिटीज के तहत संस्कृत शिक्षकों की नियुक्ति का प्रस्ताव भी दिया गया। मंत्रालय ने कहा कि संस्कृत की पढ़ाई और रिसर्च कराने वाले आईआईटी संस्थान को आर्थिक सहयोग मिलेगा। शिक्षकों की नियुक्ति की जाएगी। इसी वजह से आईआईटी कानपुर ने ह्यूमैनिटीज के तहत संस्कृत की पढ़ाई, रिसर्च कराने का खाका तैयार कर लिया है। ❖

साभार: अमर उजाला

अब रेन पाउडर से सूखे में भी लहलहाएगी फसल

सूखा या बारिश की कमी के चलते हर साल फसल उत्पादन प्रभावित हो रहा है। भारत ही नहीं, दुनिया के बड़े हिस्से में गंभीर हो चुकी यह समस्या अब इंसान के अस्तित्व को चुनौती दे रही है। बहरहाल, वैज्ञानिकों की मानें तो रेन पाउडर इसका कारगर हल हो सकता है। करीब दो साल से मैक्सिको समेत विभिन्न देशों में इस पर प्रयोग हुए हैं, जो सफल बताए गए हैं। इससे किसानों में उम्मीद की किरण जगी है। भारत में भी हर साल सूखे के कारण बड़ी संख्या में फसल बर्बाद होती है और अन्नदाता को आत्महत्या करने पर मजबूर होना पड़ता है और उनके लिए भी रेन पाउडर फायदेमंद हो सकता है। रेन पाउडर की खूबी यह है कि यह बहुत ज्यादा मात्रा में पानी सोख सकता है। 10 ग्राम पाउडर एक लीटर पानी सोख सकता है। पौधे की जड़ में डालने से यह सोखे हुए पानी को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में छोड़ता रहता है। इससे पौधा हमेशा हरा रहता है। मैक्सिको में इस पाउडर पर वेलासो कंपनी प्रयोग कर रही है। कंपनी के वैज्ञानिकों का दावा है कि इस पाउडर को मिट्टी में मिलाने पर 300 फीसदी ज्यादा फसल हासिल की जा सकती है। वर्तमान में

50 किलो रेन पाउडर की कीमत करीब एक लाख रूपए है। हालांकि वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी की लिंडा चाकर स्कॉट की राय कुछ अलग है। उनके मुताबिक, ऐसे उत्पाद नए नहीं हैं और ऐसे वैज्ञानिक प्रमाण भी नहीं हैं, जिनसे लगे कि यह पाउडर कई साल तक पानी रोक सकता है या मिट्टी में 10 साल तक रह सकता है।❖

साभार: दिव्य हिमाचल

MAHARAJA AGRASEN UNIVERSITY
UGC APPROVED
Spark ... The Change
Atal Shiksha Kunj, Kalujhanda Near Barotiwala, Baddi, Distt. Solan (HP)
❖ BEST UNIVERSITY OF YEAR 2015 IN THE CATAGORY "RESEARCH & DEVELOPMENT" ADJUDGED BY HIGHER EDUCATION REVIEW
❖ WINNER OF CCI TECHNOLOGY EDUCATION EXCELLENCE AWARD 2014 COMFORT BY GUJRAT TECHNOLOGICAL UNIVERSITY, GUJRAT

STRENGTHS OF THE UNIVERSITY

- All courses are as per UGC nomenclature and approved by respective regulatory bodies
- Choice Based Credit System (CBCS)
- Member: Association of Indian Universities (AIU)
- Highly Accomplished Faculty
- Regular Faculty Development Programmes
- Regular Guest Lectures by Experts from reputed Universities/ Industries
- Best exposure to National and International Seminars
- Industry Oriented Curriculum and regular Industrial Visits
- Wi-Fi Enabled Green Campus
- AC Class Rooms, Labs, Libraries and Seminar Halls etc.
- Amphitheatre and Auditorium
- Separate Hostel for Boys and Girls
- Fee Concessions/ Scholarships
- Rich Library Resources
- Medical Centre, Cafeteria, A.C Transport and ATM Facility
- Education Loan facility from Banks
- Best Placement and strong Corporate tie-ups
- Sports and Gym Facilities for Boys and Girls
- Summer Classes for the students needing additional academic support
- EWS families from surrounding areas under Corporate Social Responsibility (CSR) Project.

*Scholarship upto 50% is available for deserving candidates, for details please visit our website.

COURSES

Ph.D : ➢ Management, Travel & Tourism, Physics, Chemistry, Maths, English, Law, Environmental Sciences, ECE, ME, EEE

UNDER GRADUATE COURSES :
➢ B.Tech (CSE, ECE, CE, ME, EEE) (AICTE approved), LEET
➢ Bachelor in Architecture (Approved by COA)
➢ LLB, BA LLB (Hons.) (Approved by BCI)
➢ B.Com ➢ B.Com (Hons) ➢ BBA, BBA (Tourism & Travel)
➢ Bachelor in Hotel Management & Catering Technology
➢ B.Sc (Medical/Non-Medical)
➢ B.Pharm, D.Pharm
➢ BA (Journalism) ➢ Bachelor of Fine Arts (BFA) (4 Years)

POST GRADUATE COURSES :
➢ M.Tech (CSE, ECE, CE, ME, EEE)
➢ M.Com ➢ MBA (Master of Business Administration)
➢ MTTM (Master of Tourism & Travel Management) ➢ LLM
➢ M.Sc (Physics/Chemistry/Mathematics/Environmental Sciences/Bio-Technology/ Forensic Sciences)
➢ MA (English) ➢ MA (Journalism)
➢ Master of Fine Arts (Applied Arts/Painting/Sculpture) (2 Years)

MAIT: 15th All India rank in Engineering including IITs & NITs By DATAQUEST Survey 2013 Delhi Campus

Admission Open 2016-17

Admission Helpline: 093180-29217, 18, 32, 31, 35, 38, 39, 41, 45,
Website: www.mau.ac.in, Email : admission@mau.ac.in

The touch of pink is the touch of health.

As we grow into a complete healthcare company, we work to bring people better lives and better futures with advanced healthcare products and services. From innovative contraceptives to hospital equipment, healthcare services and pharma products to public healthcare programs, we're doing all it takes to make every generation glow with the touch of pink, the touch of good health.

www.lifecarehll.com

HLL Lifecare Limited

Contraceptives | Surgical and Hospital Products & Equipments | Medical Infrastructure Projects | Women's Health Care | Diagnostic Services | Vaccines
Rapid Test Kits | Natural Health Care Products | Procurement and Consultancy Services | Dental and Health Care Franchising
Condom Promotion and AIDS Prevention Programs | Hospitals and Mobile Clinics | Public Health Program Implementation and Technical Support for NGOs

शहादत को नमन

मेरे देश के वीर जवानों की शहादत को नमन
देश की खातिर जिन्होंने ओढ़ लिया कफन।
नहीं भुला सकता कोई।
इन वीरों की कुर्बानी का
वतन की खातिर जान गंवाकर
बहादुरी की निशानी का
सचमुच देश के सैनिक ही सरहद के रखवाले हैं।
देश की रक्षा के उन्होंने सपने मन में पाले हैं।
दुश्मन नहीं समझता, भारत क्यों चुप बैठा है।
छाती पर पत्थर रख, क्यों सब सहता है।
जल उठे जब भी शोला, हिन्दुस्तानी छाती का
हाल वही होगा इनका, जो हुआ लंकावासी का
मत ले परीक्षा सब्र की, वरना तू न टिक पाएगा।
संसार के नशे से तेरा नाम तक मिट जाएगा।
इन्हें अब सब्र सिखाना होगा, ऐसा ही लगता है।
वक्त है ऐसे निर्णय का यही रास्ता दिखता है।

- राजिन्दर सिंह बीकशेरिया
योग विभाग, हि.प्र. विश्वविद्यालय

नाज़ हमें उन वीरों पर

नाज हमें है उन वीरों पर, जो मान बड़ा कर आये हैं।
दुश्मन को घुसकर के मारा, शान बढ़ा कर आये हैं।।
मोदी जी अब मान गये हम, छप्पन इंची सीना है।
कुचल मसल दो उन सब को अब, चैन जिन्होंने छीना है।।
आस अब बड़ी वतन की, अरमान बड़ा कर आये हैं।
नाज हमें है उन वीरों पर, जो शान बढ़ा कर आये हैं।।
एक मरा तो सौ मारेंगे, अब रीत यही बन जाने दो।
लहू का बदला सिर्फ लहू, अब गीत यही बन जाने दो।।
गिन ले लाशें दुश्मन जाकर, शमशान बड़ा कर आए हैं।
नाज हमें है उन वीरों पर, जो शान बढ़ा कर आये हैं।।
अब बारी है उन गद्दारों की, जो घर के होकर डंसते हैं।
भारत की मिट्टी का खाते, मगर उसी पर हंसते हैं।।
उनको भी चुन-चुन मारेंगे, ऐलान बड़ा कर आये हैं।
नाज हमें है उन वीरों पर, जो शान बढ़ा कर आये हैं।।
वंदेमातरम

- यशपाल शर्मा (आर्मी मैन)
सुन्नी हि0प्र0 171103

होश फाख्ता

सर्जिकल स्ट्राईक एक वध
थर थर कांपा है दुश्मन
रौद्र रूप धरे सर्जिकल स्ट्राईक से
हो रहा दुष्टों का एक वध
किया भारतीयों फौजियों ने
पड़ोसी मुल्क के नाक तले
संत सिपाही बन भारत था
अपनी हद में अब तक।
आत्मरक्षा का यह ऐतिहासिक कदम
हुई दुनिया में वाह वाह
समर्थन मिला महाशक्तियों का भी
बढ़ा मेरे देश का प्रभाव
अभी तो ट्रेलर है
जो दिखाया है पाकिस्तान को
अचानक हमला बोल
पीओके के आतंकीस्तान पर
हो गए होश फाख्ता
आतंकवाद के आकाओं के
जो लांघते रहे सीमा।
मानवता के दुश्मन बन
बाज नहीं आ रहे जो
दहशतगर्दी का माहौल
बनाने का यहां वहां
डटे हैं मोर्चों पर
हमारे भी फौजी जवान
जिन्होंने सीख लिया है मरकर
जीवन जीने का मंत्र।
बढ़ती जिम्मेवारी को लेकर
अब तो बसन्त मनाते
दुश्मन के सिर पर
वहां तक भारत भाग
जहां खींच आए हैं लक्ष्मण रेखा
ताकत वाले हिम्मत वाले जो जांबाज
संतरी हमारे
शहीदों की कुर्बानी गई नहीं बेकार
क्योंकि उड़ी हमले बाद
दुनियां भर में हुआ बुजदिली का अपमान
अलग-थलग पड़ा पाकिस्तान
शायद यह सोचने पर हुआ विवश।
ताकतवर हिन्दुस्तान की गोली ने दिया जवाब
जिसकी सम्मानजनक जिन्दगी
जरूर मौत के मुंह से है निकली
आने वाला संहार जो करेगी
आतंक की जड़ों तक का।।

- भीमसिंह परदेशी
महादेव, सुन्दरनगर

रसोई घर

एक आयुर्वेदशाला

* ***मेथी:*** *डायबिटीज, बुखार, खांसी, भूख न लगना।*
* ***धनिया:*** *गैस, माइग्रेन, मिचली, अधिक प्यास, मुंह के छाले।*
* ***सौंफ:*** *उल्टी, पेट दर्द, गले में जलन, सिर दर्द, नींद न आना।*
* ***सोया:*** *एसिडिटी, कब्ज, जुकाम, दस्त, महावारी के दर्द।*
* ***दालचीनी:*** *अपच, गैस, फ्लू, खांसी, जोड़ों का दर्द, बुद्धिवर्धक।*
* ***हींग:*** *गैस, वायरल बुखार, स्वाइन फ्लू, बैक्टीरियल इन्फेक्शन।*
* ***अदरक:*** *बुखार, खांसी, माइग्रेन, महावारी के दर्द।*
* ***हल्दी:*** *सूजन, गैस, खून का पतला करना।*
* ***लहसुन:*** *कोलेस्ट्राल, मधुमेह, वायरल बुखार एंटी फंगल।*
* ***अजवाइन:*** *पेट दर्द, खांसी, फ्लू, जोड़ों का दर्द।*
* ***काली मिर्च:*** *दांत दर्द, चर्म रोग, खाना न पचना, खांसी, शीत ज्वर*
* ***जीरा:*** *उल्टी, खाना न पचना, पेट में कीड़े, श्वेत प्रदर, पेट दर्द।*
* ***लौंग:*** *पित, प्यास, चर्म रोग, दांत दर्द, कमर दर्द, टाइफाइड।*
* ***राई:*** *अरूचि, खाना न पचना, पेट दर्द, गैस, चर्म रोग।*
* ***इलायची:*** *भोजन पाचक, सिर दर्द, भूख न लगना, पेट की सूजन तथा दर्द।*
* ***तेज पत्ता:*** *भोजन पाचक, सिर दर्द, भूख न लगना, पेट की सूजन तथा दर्द*
* ***करी पत्ता:*** *विटामिन-ए, कैल्शियम, फोलिक एसिड, लीवर टॉनिक।*❖

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh

NATIONAL CHIKITSAK GURU
RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.

B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre
Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

पौष्टिकता से भरपूर किवी

फल कोई भी हो हमारी सेहत के लिए अच्छे ही होते हैं, लेकिन क्या आपको पता है एक ऐसा फल भी है जिसमें एक या दो नहीं बल्कि 27 के आसपास पोषक तत्व पाए जाते हैं। हम बात कर रहे हैं किवी की, जिसे खाने से आप कई तरह की बीमारियों से दूर रह सकते हैं और आने वाली बीमारियों से बच सकते हैं। यह एक ऐसा फल है जो खाने में तो स्वादिष्ट है ही, साथ ही अपने अंदर कई पोषक तत्वों को समेटे हुए है। किवी को हमारी अच्छी सेहत का दोस्त कहना गलत नहीं होगा। चीकू जैसा दिखने वाला यह फल कम ही लोग खाते हैं, लेकिन जब आप इसके सेहत संबंधी तथ्यों के बारे में जानेंगे तो खुद को इस फल को खाने से रोक नहीं पाएंगे। आप डायबिटीज कंट्रोल करना चाहते हों या डिप्रेशन कम करना चाहते हों, किवी ही एक ऐसा फल है जो आपको इन परेशानियों से बचाएगा और साथ ही अन्य बीमारियों से निजात दिलाने में भी आपकी मदद करेगा।

फल एक फायदे अनेक:

किवी में विटामिन सी बहुतायत में पाया जाता है जो हमारे शरीर के लिए एक एंटी आक्सीडेंट की तरह काम करके शरीर के इम्यून स्स्टिम को और मजबूत करता है और हमें सर्दी जुकाम से बचाए रखता है। किवी में पाया जाने वाला विटामिन ई त्वचा संबंधित परेशानियों से निजात दिलाता है और लंबे समय तक युवा भी बनाए रखता है। अगर आपको कब्ज की दिक्कत रहती है तो किवी में मौजूद फाइबर आपकी इस समस्या को दूर करने में आपकी मदद करेगा। एनीमिया की समस्या से भी किवी आपको बचाता है। इसमें पाया जाने वाला विटामिन आयरन सोखने में मदद करता है जिससे एनीमिया के इलाज में काफी मदद मिलती है। डायबिटीज के रोगी किवी खाकर इस समस्या से बच सकते हैं और काफी हद तक शुगर को कंट्रोल कर सकते हैं। किवी में ग्लाइकेमिक इंडेक्स काफी कम होता है जो रक्त में ग्लूकोज को बढ़ने से रोकता है और उसे कंट्रोल में रखता है। आजकल जिन्दगी काफी तनावपूर्ण रहने लगी है। ऑफिस में काम का दबाव, घर में काम का तनाव जिससे लोगों में डिप्रेशन की समस्या रहने लगी है। एक ताजा अध्ययन में यह बात सामने आई है कि जो लोग रोज किवी का सेवन करते हैं, वे ज्यादा खुश रहते हैं और ऊर्जावान् भी महसूस करते हैं। किवी में पाए जाने वाले विटामिन सी से लोग आशावादी महसूस करते हैं और खुश भी रहते हैं। अगर आप नींद ना आने की समस्या से परेशान हैं तो किवी को अपनी डाइट में शमिल करें। किवी में पाया जाने वाला सेरोटोनिन अच्छी नींद लेने में आपकी सहायता करता है। गर्भवती महिलाओं को फॉलिक एसिड की जरूरत होती है जो कि किवी में पाया जाता है। किवी का गूद्दा ही नहीं छिलका भी काफी लाभदायक माना गया है। ❖

किचन गार्डन और बंजर भूमि में भी उग सकेंगे जंगली मशरूम

जंगल में मिलने वाली मशरूम अब घर के गार्डन में भी उगाई जाएगी। खुंब निदेशालय चंबाघाट सोलन के वैज्ञानिकों ने 79 जंगली मशरूम के शुद्ध कल्चर तैयार कर लिए हैं। 90 दिन में तैयार होने वाली प्रजाति अब 45 दिन में ही तैयार हो जाएगी। इसमें खास बात यह है कि इसकी खेती किसान बंजर भूमि पर भी कर सकेंगे। वर्तमान में हिमाचल में जंगली मशरूम की 205 प्रजातियां खुंब निदेशालय के वैज्ञानिकों ने ढूंढी हैं। इन्हें प्रोटीन का सर्वोच्च स्त्रोत माना गया है। यह खुलासा खुंब शहर सोलन की 19वीं वर्षगांठ के दौरान वैज्ञानिकों ने किया है। कार्यक्रम में नौणी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. हरिचंद शर्मा मुख्यातिथि रहे। जबकि सीपीआरआई शिमला के निदेशक एसके चक्रवर्ती बतौर विशिष्ट अतिथि रहे। खुंब अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. वीपी शर्मा के आधार पर 35 से 40 फीसदी प्रोटीन पाई जाती है। मशरूम में विटामिन डी भी पाया जाता है। जो कि रक्तचाप को नियंत्रित करने में भी सहायक है। उनसे मशरूम की अलग-अलग प्रजातियों व उनकी उगाने की जानकारी हासिल की। तमिलनाडु के खुंब उत्पादक सीवीजयन के कहा कि वह प्रतिवर्ष 250 टन ढिंगरी व मिल्की मशरूम का उत्पाद कर रहे हैं। कर्नाटक के श्रीकल कुलकर्णी ने कहा कि वह प्रतिवर्ष 500 टन मशरूम का उत्पादन कर रहे हैं इसी तरह देहरादून की हिरेशा वर्मा, ओडिशा की अजया ने भी अपने विचार रखे। इस वर्ष सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनी का पुरस्कार हिमालय इंटरनेशलन लिमिटेड पांवटा साहिब को मिला। ❖

विजयादशमी उत्सव पर सरसंघचालक डॉ॰ मोहन भागवत जी का संबोधन

आदरणीय प्रमुख अतिथि महोदय, निमंत्रित विशिष्ट अतिथिगण, नागरिक सज्जन माता भगिनी, माननीय संघचालक गण एवं आत्मीय स्वयंसेवक बंधु, अपने पवित्र संघकार्य के 90 वर्ष पूर्ण होने के पश्चात् युगाब्द 5118 अर्थात् ई.स. 2016 का यह विजयादशमी उत्सव एक वैशिष्ट्यपूर्ण कालखण्ड में संपन्न हो रहा है। स्व. पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय की जन्मशती के सम्बन्ध में पिछले वर्ष ही मैंने उल्लेख किया था। वह 100वाँ वर्ष पूरा होने के बाद इस वर्ष भी उनके जन्मशती के कार्यक्रम चलने वाले हैं। यह वर्ष अपने इतिहास के कुछ और ऐसे महापुरुषों के पुन:स्मरण का वर्ष है, जिनके जीवन संदेश के अनुसरण की आवश्यकता आज की परिस्थिति में हम सबको प्रतीत होती है।

यह वर्ष आचार्यश्री अभिनवगुप्त की, दक्षिण के प्रसिद्ध संत 'श्रीभाष्य'कार श्री रामानुजाचार्य की सहस्राब्दी का वर्ष है तथा प्रज्ञाचक्षु श्री गुलाबराव महाराज का भी जन्मशती वर्ष है। देश, समाज व धर्म की रक्षा हेतु ''मीरी व पीरी'' का दोधारी बाना अपनाते हुए स्वाभिमान की रक्षा व पाखंड का ध्वंस करने वाले दशमेश श्री गुरुगोविंद सिंह जी महाराज के जन्म का 350वाँ वर्ष मनाने जा रहा है। देश धर्म के हित में सर्वस्व समर्पण व सतत् संघर्ष का उनका तेजस्वी आदर्श स्मरण करते हुए स्वामी विवेकानन्द जी ने भी लाहौर के उनके प्रसिद्ध भाषण में हिन्दू युवकों को उस आदर्श का अनुसरण करने का परामर्श दिया था। वर्ष भर में जो परिस्थिति व घटनाक्रम हम अनुभव करते आ रहे हैं उसका अगर बारीकी से अध्ययन व चिन्तन करें तो इन चारों महापुरुषों के संदेशों के अनुसरण का महत्व ध्यान में आता है।

यह स्पष्ट है कि गत दो वर्षों में देश में व्याप्त निराशा दूर करने वाली, विश्वास बढ़ाने वाली व विकास के पथ पर देश को अग्रसर करने वाली नीतियों के कारण कुल मिलाकर देश आगे बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। यह भी स्पष्ट है – व हमने अपनायी हुई प्रजातांत्रिक प्रणाली में कुछ अपेक्षित भी है– कि जो दल सत्ता से वंचित रहते हैं वे विरोधी दल बनकर शासन प्रशासन की कमियों को ही अधो–रेखांकित कर अपने दल के प्रभाव को बढ़ाने वाली राजनीति कर रहे हैं, करेंगे। इसी मंथन में से देश के प्रगतिपथ की सहमति व उसके लिये चलने वाली नीतियों की समीक्षा, सुधार व सजग निगरानी होते रहना प्रजातंत्र में अपेक्षित रहता है। परंतु जो चित्र पिछले सालभर में दिख रहा है, उसमें कुछ चिंताजनक प्रवृत्तियों के खेल खेले जाते हुए स्पष्ट दिखते हैं। देश की स्थिति व विश्व परिदृश्य की थोड़ी बहुत जानकारी रखने वाले सभी को यह पता है कि भारत का समर्थ, एकात्म, आत्मनिर्भर व नेतृत्वक्षम होकर उभरना फूटी आंखों न सुहाने वाली कुछ कट्टरपंथी, अतिवादी, विभेदकारी व स्वार्थी शक्तियां दुनिया में हैं व भारत में भी अपना जाल बिछाए काम कर रही हैं। भारत के समाज–जीवन से अभी तक पूर्णत: निर्मूल न हो पायी विषमता, भेद व संकुचित स्वार्थ प्रवृत्तियों के चलते यदाकदा घटने वाली घटनाओं का लाभ लेकर, अथवा घटना घटे इसके लिये कतिपय लोगों को उकसाते हुए अथवा अघटित घटनाओं के घटने का असत्य प्रचार करते हुए विश्व में भारतवासी तथा भारत का शासन प्रशासन तथा भारत में ऐसी दुष्प्रवृत्तियों को रोक सकने वाले संघ सहित सज्जन शक्ति को विवादों में खींचकर बदनाम करने का व लोकमानस को उनके बारे में भ्रमित करने का प्रयास चलता हुआ दिखाई देता है। जैसी उनकी आकांक्षाएं व चरित्र रहा है, यह प्रयास, आपस में भी टकराने वाली यह शक्तियां अलग–अलग अथवा समान स्वार्थ के लिये गोलबंद होकर करेंगी हीं। उनके भ्रमजाल तथा छल कपट के चंगुल में फंसकर समाज में विभेद व वैमनस्य का वातावरण न बने इसके प्रयास करने पड़ेंगे।

संघ के स्वयंसेवक इस दिशा में अपने प्रयासों की गति बढ़ा रहे हैं। अनेक प्रांतों में इस दृष्टि से सामाजिक समता की सद्य:स्थिति का सर्वेक्षण किया जा रहा है तथा उपाय के लिये समाज–मन की अनुकूलता बनाने की बातचीत शाखाओं के द्वारा अपने–अपने गांव–मुहल्ले में प्रारंभ कर दी गयी है। उदाहरण के लिये संघ की दृष्टि से मध्यभारत प्रान्त माने गये

क्षेत्र के 9000 गांवों का विस्तारपूर्वक सर्वेक्षण पूरा हुआ, जिसमें अभी तक लगभग 40 प्रतिशत गांवों में मंदिर, 30 प्रतिशत में पानी व 35 प्रतिशत गांवों में श्मशान को लेकर भेदभाव का व्यवहार होता है, यह बात सामने आयी हैं। उनके उपाय के लिये प्रयास भी प्रारम्भ हुए है। अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के लिये बने संवैधानिक प्रावधानों का, उनके लिये आबंटित धनराशि का विनियोग व निर्वाह प्रामाणिकता व तत्परता के साथ शासन व प्रशासन के द्वारा हो इसलिये भी संघ के स्वयंसेवकों ने सहायता का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। अपनी जितनी शक्ति, जानकारी व पहंच है, उतना सामाजिक समता की दिशा में संघ के स्वयंसेवकों का यह प्रयास होगा ही। परंतु समाज हितैषी सभी व्यक्तियों व शक्तियों को अधिक सक्रिय होकर इस दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता है। छोटी-मोटी घटना से उत्तेजित होकर अथवा अपनी श्रेष्ठता के अहंकार में अपने ही निरपराध बंधुओं को अपमान व प्रताड़ना सहन करनी पड़े, यह 21वीं सदी के भारतीय समाज के लिये लज्जाजनक कलंक है ही, कतिपय छिद्रान्वेषी शक्तियां इसी का लाभ लेकर भारत को बदनाम करने की गतिविधियां चलाती हैं तथा समाज में चलने वाले अच्छे उपक्रमों की गति अवरुद्ध करने का प्रयास करती हैं।

समूचे जम्मू-कश्मीर राज्य की सद्य:स्थिति इस दृष्टि से हमारी चिंताएं और बढ़ाती है। इस सम्बन्ध में अब तक चलती आयी सफल अंतर्राष्ट्रीय राजनयिक गतिविधियां तथा शासन व संसद के द्वारा बार-बार व्यक्त किये दृढ़तापूर्ण संकल्प स्वागतार्ह हैं, परंतु उस सही नीति का तत्पर व दृढ़तापूर्ण क्रियान्वयन हो यह भी आवश्यक है। जम्मू-लद्दाख सहित कश्मीर घाटी का बड़ा क्षेत्र अभी भी कम उपद्रवग्रस्त व अधिक नियंत्रण में है। वहाँ पर राष्ट्रीय प्रवृत्तियां व शक्तियों का बल बढ़े, पक्का हो व स्थापित हो, ऐसी शीघ्रता करनी चाहिये। उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में उपद्रव उत्पन्न करने वाले स्थानीय व परकीय तत्वों का कड़ाई से व शीघ्र नियंत्रण हो इसलिये राज्य शासन व केन्द्र शासन अपने अपने प्रशासन सहित एकमत व एकनीति बनाकर दृढ़ता व तत्परता दिखाए, इसकी आवश्यकता है। मीरपुर, मुजफ्राबाद, गिलगिट, बाल्टिस्तान सहित संपूर्ण कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है, यह दृढ़ भूमिका बनी रहनी चाहिये। वहाँ से विस्थापित हुए बंधु और कश्मीर घाटी से विस्थापित पंडित हिंदू, सम्मान, सुरक्षा तथा योगक्षेम की स्थिरता के प्रति निश्चित होकर यथापूर्व पुन:स्थापित हो जायें, यह कार्य शीघ्रता से आगे बढ़ाना होगा।

समाज में चलने वाले अनेक उपक्रम, पर्व त्यौहार, अभियान इत्यादि का प्रारंभ समाज प्रबोधन व संस्कार की शाश्वत आवश्यकता को ध्यान में लेकर हुआ। उस प्रयोजन का विस्मरण हुआ तो उत्सव तो चलते रहता है, परंतु उसका रूप बदलकर कभी-कभी भद्दा निरर्थक बन सकता है। प्रयोजन ध्यान में लेकर इन पर्वों के सामाजिक स्तर पर आयोजन का काल सुसंगत रूप गढ़ना चाहिये तो आज भी वह समाज प्रबोधन का अच्छा साधन बन सकते हैं।

समाज ऐसा दैवीगुणसंपदयुक्त बने, इसलिये अपने उदाहरण से ऐसे आचरण का वातावरण बनाने का एकमात्र कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कर रहा है। अपने नि:स्वार्थ एवं अकृत्रिम आत्मीयता से समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जोड़ना, अपने इस पवित्र और प्राचीन हिन्दू राष्ट्र को विश्व का परमवैभव संपन्न बनाने के भव्य लक्ष्य के साथ उसको तन्मय करना, कार्य के योग्य बनने के लिये शरीर, मन, बुद्धि का विकास करने वाली सहज, सरल शाखा साधना उसके जीवन का अंग बनाना, तथा ऐसे साधकों को आवश्यकता व क्षमतानुसार समाज जीवन के विविध अंगों में आवश्यक कार्य को सेवाभाव से करने के लिये प्रवृत्त करना यही उसकी कार्यपद्धति रही है। शीघ्रतापूर्वक समाज में इस परिवर्तन को लाने के लिये चलने वाली समरसता, गौसंवर्धन, कुटुंब प्रबोधन जैसी गतिविधियों का व उपक्रमों का अत्यल्प परिचय इस भाषण में आपको दिया है। परंतु संपूर्ण समाज ही इस दृष्टि से सक्रिय हो इसकी आवश्यकता है। नवरात्रि के नौ दिन तपस्यापूर्वक देवों ने - अर्थात् उस समय की सज्जनशक्ति ने - अपनी-अपनी शक्ति को परस्पर समन्वित व पूरक बनाकर सम्मिलित किया व दसवें दिन चंडमुंडमहिषासुर रूप मायावी असुर शक्ति का निर्दलन कर मानवता के त्रस का हरण किया, वही आज का विजयादशमी - विजयपर्व है। अतएव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के इस राष्ट्रीय कार्य पर आपके स्नेह व प्रोत्साहन की छाया की दृष्टि के साथ आपकी सहयोगिता व सहभागिता भी बढ़ती रहे, इस विनम्र आह्वान के साथ मैं इस वक्तव्य को विराम देता हूँ। आप सभी को विजयादशमी की शुभेच्छाएं तथा सभी की ओर से एक प्रार्थना -

देह सिवा बर मोहि इहै सुभ करमन ते कबहुं न टरों।
न डरों अरि सो जब जाई लरों निसचै कर अपनी जीत करों।
अरु सिख हों आपने ही मन कौ, इह लालच हउ गुन तउ उचरों.
जब आव की अउध निदान बनै, अति ही रन मै तब जूझ मरों..

भारत माता की जय ..❖

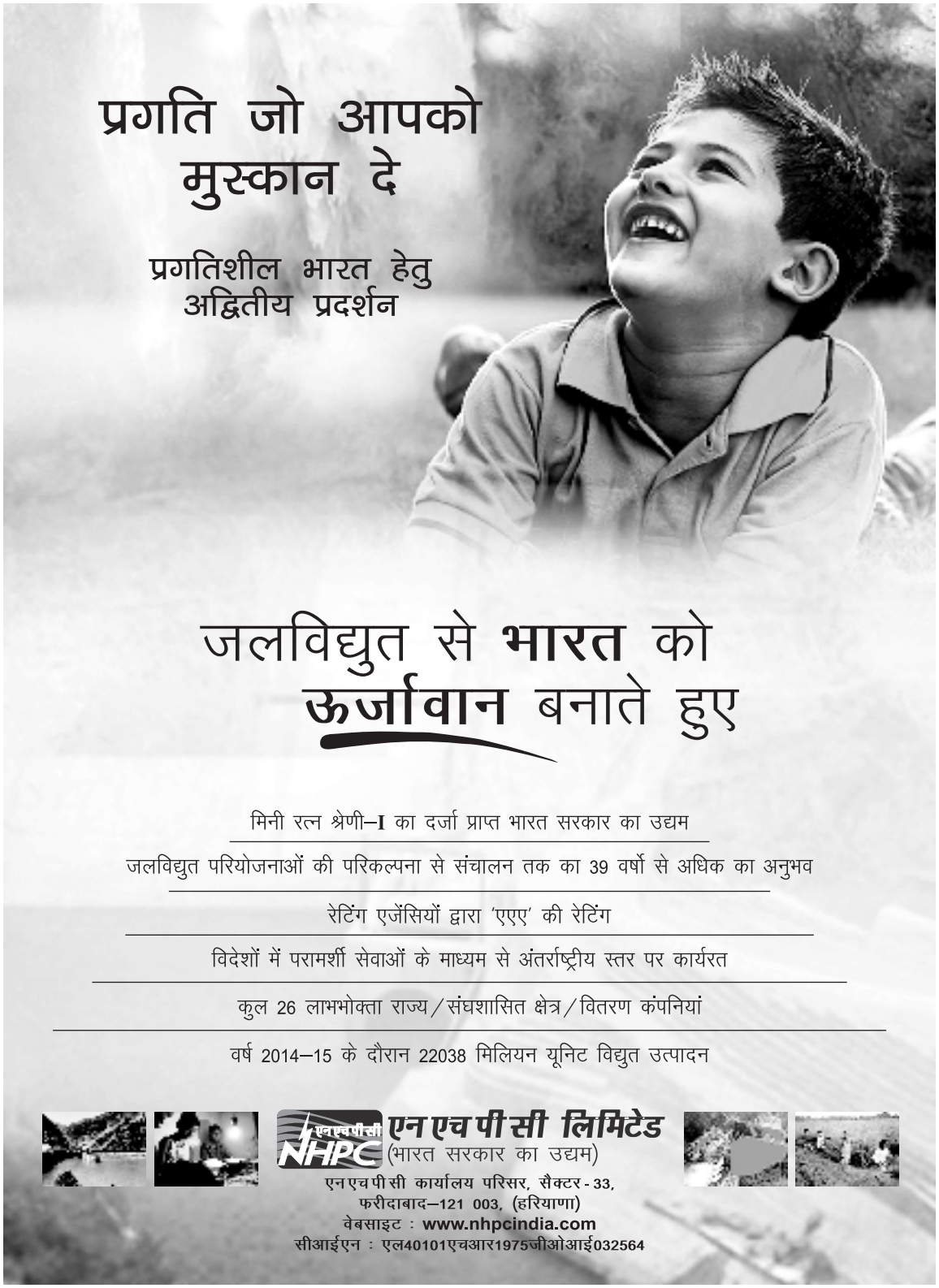
प्रगति जो आपको
मुस्कान दे
प्रगतिशील भारत हेतु
अद्वितीय प्रदर्शन
जलविद्युत से भारत को
ऊर्जावान बनाते हुए
मिनी रत्न श्रेणी–I का दर्जा प्राप्त भारत सरकार का उद्यम
जलविद्युत परियोजनाओं की परिकल्पना से संचालन तक का 39 वर्षो से अधिक का अनुभव
रेटिंग एजेंसियों द्वारा 'एएए' की रेटिंग
विदेशों में परामर्शी सेवाओं के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत
कुल 26 लाभभोक्ता राज्य/संघशासित क्षेत्र/वितरण कंपनियां
वर्ष 2014–15 के दौरान 22038 मिलियन यूनिट विद्युत उत्पादन
एनएचपीसी लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
एनएचपीसी कार्यालय परिसर, सैक्टर-33,
फरीदाबाद–121 003, (हरियाणा)
वेबसाइट : www.nhpcindia.com
सीआईएन : एल40101एचआर1975जीओआई032564

सेना में महिलाओं की भूमिका बढ़ाने के पक्ष में पर्रिकर

भारतीय वायुसेना में महिला लड़ाकू पायलटों की भर्ती से सेनाओं में महिलाओं की भूमिका को लेकर पहली मानसिक बाधा दूर करने की बात करते हुए रक्षा मंत्री मनोहर पर्रीकर ने कहा है कि वह सेना में महिलाओं की भूमिका बढाने के पक्ष में हैं। उन्होंने कहा कि इसी तरह तीनों सेनाओं में समाघात भूमिका में महिलाओं की संख्या धीरे-धीरे बढाई जा सकती है। फिक्की लेडिज संगठन (एफएलओ) द्वारा आयोजित एक बैठक को संबोधित करते हुए रक्षा मंत्री ने पूछा कि आखिर क्यों नहीं थलसेना में एक पूरी बटालियन ही महिलाओं की गठित की जा सकती है।

बोले पर्रिकर

* किसी पनडुब्बी में महिला नौसैनिक को तैनात नहीं किया जा सकता है।
* मगर किसी युद्धपोत पर तो निश्चित ही महिला अफसरों की तैनाती हो सकती है।
* युद्धपोतों पर महिलाओं के रहने के जरूरी इंतजाम किए जा सकते हैं।
* मलेशिया जैसे देश की नौसेना में भी युद्धपोतों पर महिला नौसैनिकों को तैनात किया जाता है।

दो दशक से कमीशन

तीनों सेनाओं में महिला अफसरों को मेडिकल, एजुकेशन, लॉजिस्टिक्स, प्रशासन आदि विभागों में पिछले महीने भर्ती कर एक नए युग की शुरूआत की गई है।❖

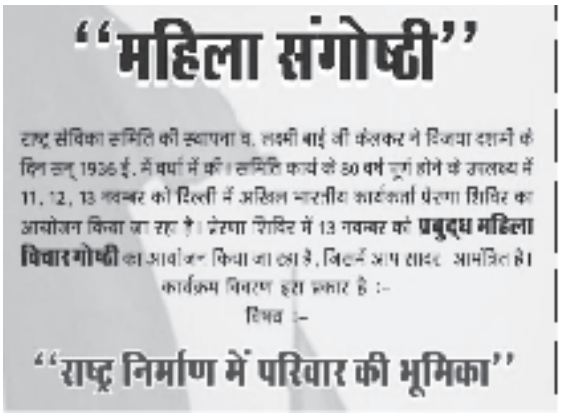
"महिला संगोष्ठी"

राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना पू. लक्ष्मी बाई जी केलकर ने विजया दशमी के दिन सन् 1936 ई. में वर्धा में की। समिति कार्य को 80 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 11, 12, 13 नवम्बर को दिल्ली में अखिल भारतीय कार्यकर्ता प्रेरणा शिविर का आयोजन किया जा रहा है। प्रेरणा शिविर में 13 नवम्बर को **प्रबुद्ध महिला विचार गोष्ठी** का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें आप सादर आमंत्रित है।
कार्यक्रम विवरण इस प्रकार है :-
विषय :-
"राष्ट्र निर्माण में परिवार की भूमिका"

भारत की पहली महिला कमांडो प्रशिक्षक - डॉ. सीमा राव

मन की लगन होगी या मुंबई के स्वतंत्रता सेनानी के परिवेश से आने का असर तभी डॉक्टरी की पढ़ाई और क्राइसिस मैनेजमेंट में डिग्री लेने के बाद डॉ. सीमा राव ने आरामदेह फैमिली लाइफ तजकर दूरदराज के दूभर इलाकों में पोस्टिंग वाला कमांडो जैसा ऑफ बीट प्रोफेशन चुना होगा। तंग दायरे में कमांडो ऐक्शन में महारत रखने वाले-बल्कि इस पर 'राव सिस्टम ऑफ रिफ्लेक्शन फॉयर' डिवेलप करने वाली सीमा पति मेजर दीपक राव के साथ मिलकर पिछले 18 साल में अभी तक अर्धसैनिक बलों, कमांडो विंग, कोर बैटिल स्कूल्स, ऐकडमिक ऐंड रेजिमेंट सेंटर्स, नेवी मार्कोस, मरीन कमांडो, एनएसजी ब्लैक कैट, एयर फोर्स गरूड, आईटीबीपी और पुलिस इकाइयों के 15 हजार जवानों व आफिसर्स को कमांडो और मार्शल आर्ट में प्रशिक्षित कर चुकी हैं। वे भारत की पहली महिला कंमाडों ट्रेनर हैं। सीमा की अन्य विशेषताओं को सुनकर तो गश आ सकता हैं। वे इंडियन एयरफोर्स की प्रशिक्षित स्कॉई डाइवर हैं, कॉबेंट शूटिंग इंस्ट्रक्टर हैं, सेना के पर्वतारोहण संस्थान की रैंक होल्डर हैं, 'जीत कुनो डो' नामक सैन्य विद्या सिखाने वाले विश्व की गिनी-चुनी प्रशिक्षकों में से हैं, अच्छी लेखिका हैं और सातवीं डिग्री ब्लैक बेल्ट होने के साथ मिसेज इंडिया वर्ल्ड ब्यूटी कांटेस्ट के फाइनल दौर में स्थान बना चुकी हैं। पुरस्कारों की तो गणना नहीं- इनमें भारत सरकार के सौ प्रशस्ति पत्रों के साथ अमेरिकी राष्ट्रपति और मलयेशिया के प्रधानमंत्री के पुरस्कार और वर्ल्ड पीस प्राइज जैसे अवॉर्ड भी शामिल हैं। ❖

सबने कहा ये काम लड़कियों का नहीं, इसलिए बनी रेलवे गार्ड, अकेली कर रही 14 घंटे की ड्यूटी

मालगाड़ी का आखिरी डिब्बा, घुप्प अंधेरा, शरीर को झकझोर देने वाले जबर्दस्त झटके, बैठने के लिए लोहे की कुर्सी, पीने का पानी नहीं और न ही वाशरूम। यहां हाथ में लाल-हरा झंडा थामें किसी महिला को ड्यूटी करते शायद ही पहले कभी किसी ने देखा हो, लेकिन बिलासपुर की बहू मोऊ भट्टाचार्य जोन की पहली महिला गार्ड है, जबकि गुड्स गार्ड की नौकरी सिर्फ लड़के ही कर सकते हैं।

उनके मुताबिक, मैं कोलकाता में गवर्नमेंट स्कूल में टीचर थी। ब्याह कर बिलासपुर आई। जॉब तो करना ही था। रेलवे गुड्स गार्ड के लिए आवेदन करने पर सबने कहा ये काम लड़कियों का नहीं है, नहीं कर पाओगी।

सभी ने मना किया तो हिम्मत मिली। मैंने फर्स्ट च्वाइस में गुड्स गार्ड ही भरा। सलेक्शन हुआ और बीते 5 महीने से मैं लाइन ड्यूटी कर रही हूं। वे बताती हैं कि आवेदन करने पर सबने कहा कि गार्ड की ड्यूटी आसान नहीं है। ट्रेन कहीं भी रूकती है, दिन-रात नौकरी करनी होगी। जंगल में भी ट्रेन घंटों खड़ी रहेगी। काम लड़कियों के लिए तो है ही नहीं। शायद लोगों का डिमोरलाइज करना ही मेरे लिए मोरल स्पोर्ट बना। मैं लाइन ड्यूटी कर रही हूं और करती रहूंगी।

डॉक्टर की बेटी, एमएससी के बाद गेट क्वालीफाइड

ऐसा नहीं है कि मोऊ आर्थिक तौर पर कमजोर है, एजुकेशन कम हो या नौकरी की जरूरत। पिता पेशे से डॉक्टर हैं, पति रेलवे में पदस्थ हैं। घर में सभी हाइली एजुकेटेड हैं, खुद एमएससी करके गेट क्वालीफाई कर चुकी हैं। मोऊ कहती हैं कि ऐसा कोई कारण नहीं है कि मुझे नौकरी करनी ही पड़े। बस जिद है, करके दिखाना है।❖

जज्बा-ए-राष्ट्र को नमन्!

कश्मीर में आतंकियों से लड़ते हुए शहीद होने वाले कर्नल की पत्नी स्वाति महादिक भी अब सेना में जाकर दुश्मनों को टक्कर देने को तैयार है। 37 साल की स्वाति के पति संतोष महादिक 9 महीने पहले कश्मीर के कुपवाड़ा में आतंकियों से लड़ते हुए शहीद हो गए थे। दरअसल, 1 सितंबर को सर्विस सिलेक्शन कमीशन की फाइनल लिस्ट में स्वाति का नाम आ गया है।

पत्नी बनने जा रही लेफ्टिनेंट

स्वाति ने पुणे यूनिसर्सिटी से पढ़ाई की है। उन्होंने स्पेशल टीचर के रूप में कई सारे शैक्षणिक संस्थानों में पढ़ाया भी है। स्वाति ने संतोष का जिक्र करते हुए कहा 'संतोष हमेशा कहा करते थे कि संतुष्टि सबसे जरूरी है। वह उसे तृप्ति कहते थे। सेना में चयन होने के बाद मुझे वही

मिली है। मेरे पति बहुत अच्छे थे। मेरे दो प्यारे बच्चे भी हैं। अब मुझे वैसी ही यूनिफॉर्म पहनने का मौका मिलेगा जैसी मेरे पति पहना करते थे।' स्वाति के दो बच्चे हैं। उनकी लड़की 11 साल की है और बेटा स्वराज 6 साल का है। सेना में भर्ती से पहले स्वाति को 11 महीने की ट्रेनिंग लेनी होगी। इसके लिए उन्हें ऑफीसर्स ट्रेनिंग एकेडमी (OTA) में चेन्नई जाना होगा। इसके बाद वह सेना में लेफ्टिनेंट की पोस्ट पर ज्वाइन करेंगी। उनके पति संतोष नवंबर 2015 में शहीद हुए थे। तब ही स्वाति ने सेना में जाने की ठान ली थी। ❖

संयुक्त राष्ट्र चार्टर का देववाणी संस्कृत में अनुवाद

संयुक्त राष्ट्र ने भारत की सबसे प्राचीन और पारंपरिक भाषा संस्कृत को अपने चार्टर में शामिल कर लिया है। ऐसा पहली बार है कि जब कोई इतना अहम् अंतरराष्ट्रीय दस्तावेज़ संस्कृत भाषा में अनुवादित किया गया है। यह चार्टर संयुक्त राष्ट्र की बुनियादी संधि है। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि सैय्यद अकबरूद्दीन ने कहा है ''चार्टर अब संस्कृत में उपलब्ध है। इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए डॉ. जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी आपका शुक्रिया।'' उन्होंने ट्विटर पर चार्टर के संस्कृत कवर की एक तस्वीर भी डाली। त्रिपाठी लखनऊ स्थित अखिल भारतीय संस्कृत परिषद् के सचिव हैं। चार्टर संयुक्त राष्ट्र की सभी छह आधिकारिक भाषाओं में उपलब्ध है। ❖ **साभार: म्हारा देश म्हारी माटी**

अपने वजन का 30 गुना पानी सोखता है इनका बनाया पॉलीमर

सामान्य सुपर एब्जॉरबेंट पॉलीमर जैविक तरीके से नष्ट नहीं होते। उनमें काफी केमिकल्स होते हैं। यह काफी महंगे भी होते हैं। एक टन पॉलीमर बनाने का खर्च 1.35 लाख रूपए के आसपास आता है। कियारा ने 45 दिनों के रिसर्च के दौरान पाया कि नींबू प्रजाति के ज्यादातर फलों में यह पॉलीमर प्राकृतिक रूप से मौजूद रहता है। जूस बनाने वाली फैक्टरी के कचरे से उन्होंने संतरे और रूचिरा फलों के छिलके लिए और उनसे पॉलमर तैयार किए। ये सस्ते हैं और मिट्टी में आसानी से नष्ट भी हो जाते हैं। यह अपने वजन का 300 गुना पानी सोखता है। इससे मिट्टी नम रहती है और पौधों को पानी मिलता रहता है। इन्हें बनाने का खर्च भी 2,000 से 4,000 रूपए प्रति टन आता है। ❖

साभार: दैनिक भास्कर

भारतीय मूल की 16 साल की कियारा ने जीता गूगल अवार्ड

क्या कभी किसी ने सोचा कि संतरे के छिलके से खेती में सूखे की समस्या का समाधान हो सकता है? भारतीय मूल की 16 साल की कियारा ने संतरे और रूचिरा (एवाकेडो) फलों के छिलके से ऐसा पॉलीमर बनाया है जो पानी सोखता है। इससे मिट्टी में नमी बनी रहती है। सूखे के इस समाधान के लिए कियारा को इस साल 'गूगल साइंस फेयर' में 50,000 डॉलर (3. 35 लाख रू.) का अवार्ड मिला है। इस प्रतियोगिता में 13 से 18 साल के बाल वैज्ञानिक भाग लेते हैं। उन्हें दुनिया की बड़ी चुनौतियों का समाधान निकालना होता है। 11वीं की छात्रा कियारा दक्षिण अफ्रीका की नागरिक हैं। द. अफ्रीका में खेती का बड़ा इलाका अक्सर सूखे से प्रभावित रहता है। इसी से प्रेरित होकर कियारा ने 'अब कोई फसल प्यासी नहीं रहेगी' नाम से प्रोजेक्ट बनाया था। उन्हें बचपन से ही केमिस्ट्री पसंद है। इस पॉलीमर को मिट्टी में मिलाकर इस्तेमाल किया जाता है। कियारा मशहूर कृषि विज्ञानी एमएस स्वामीनाथन को अपना आदर्श मानती हैं। वह कहती हैं कि स्वामीनाथन सिर्फ भारत नहीं, बल्कि पूरे विश्व में खेती में स्थायी विकास की बात करते थे। कियारा बड़ी होकर कृषि वैज्ञानिक बनना चाहती हैं। मॉलिक्यूलर गैस्ट्रोनॉमी में भी उनकी काम करने की तमन्ना है। कियारा को भरोसा है कि उनके पॉलीमर से किसानों को काफी मदद मिलेगी और खाद्य सुरक्षा 73 प्रतिशत बढ़ जाएगी। अब वह संतरे के छिलके से बने पॉलीमर से पानी फिल्टर करने पर प्रयोग कर रही है।❖

भारतीय मूल के सांसद ने ऋग्वेद की ली शपथ

भारत मूल के बैंकर जितेश गढ़िया ने ब्रिटेन के हाउस ऑफ लार्ड्स में ब्रिटिश सांसद के रूप में शपथ लेते समय भारत के प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद पर हाथ रखकर शपथ ली। इसे दुनिया का सबसे प्राचीन ग्रंथ माना जाता है। इससे पहले किसी भी ब्रिटिश भारतीय ने ऋग्वेद के साथ शपथ नहीं ली थी। गढ़िया गुजरात से संबंध रखते हैं। ❖ **साभार: म्हारा देश म्हारी माटी**

निम्नतम स्तर पर राजनीति

पिछले हफ्ते भारतीय राजनीति अपने निम्नतम स्तर को छू गई जब कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी और उनके सहयोगी संजय निरूपम जैसे कुछ नेताओं ने कश्मीर में नियंत्रण रेखा के पार आतंकवादी कैंपों को ध्वस्त करने के लिए भारतीय सेना द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक के बारे में बहुत ही आपत्तिजनक बयान दिया। सबसे खराब टिप्पणी राहुल गांधी की ओर से आई। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर हमारे जवानों की खून की दलाली करने और उनके बलिदान का दुरूपयोग करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि ये जो हमारे जवान हैं, जिन्होंने अपना खून दिया है, उनकी आप दलाली कर रहे हो। राहुल गांधी की खून की दलाली वाली टिप्पणी कुछ उसी तरह उनके गले की फांस बन सकती है जिस तरह 2007 में उनकी मां सोनिया गांधी द्वारा नरेन्द्र मोदी के खिलाफ दिया गया एक निंदनीय बयान समूची पार्टी की किरकिरी का कारण बना था। अपने उस दुर्भाग्यपूर्ण भाषण से उन्होंने गुजरात विधानसभा चुनाव को तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के पक्ष में मोड़ दिया था। सोनिया गांधी ने नरेन्द्र मोदी को मौत का सौदागर कहा था। 2014 के लोकसभा चुनावों के दौरान भी सोनिया ने कुछ इसी तरह का एक और असभ्य बयान दिया।

एक जनसभा में उन्होंने मोदी पर जहर की खेती करने और देश के सेक्युलर वातावरण को छिन्न-भिन्न करने का आरोप लगाया। इसने भी आम चुनाव में कांग्रेस की संभावनाओं को प्रभावित किया। आश्चर्यजनक रूप से राहुल गांधी ने ट्विटर पर कुछ ही दिनों पहले प्रधानमंत्री मोदी के कदम की जमकर तारीफ की थी। उन्होंने कहा था कि जब मोदी जी एक प्रधानमंत्री के लायक काम करते हैं तो मैं भी उनका समर्थन करता हूं। उन्होंने आगे कहा कि नरेंद्र मोदी ने ढाई साल में पहला ऐसा काम किया है जो प्रधानमंत्री पद के लायक हो। यहां उनकी बातों में अहंकार झलकता है। ऐसा लगता है जैसे वह प्रशंसा करके मोदी पर दया कर रहे हैं। एक ऐसे व्यक्ति की ओर से इस तरह की टिप्पणी उल्लेखनीय है जो लंबे समय तक सांसद रहने के बाद भी सार्वजनिक पद पर कभी नहीं रहा है। जो लोकतंत्र का ककहरा भी नहीं जानता है, लेकिन दूसरों को इसकी सीख देता है। राहुल गांधी को लगता है कि उनके साथ सिर्फ गांधी नाम जुड़े होने के कारण ही उन्हें नरेन्द्र मोदी, जो कि देश के एक प्रमुख राज्य के एक दशक से अधिक समय तक मुख्यमंत्री रहे हैं, सहित दूसरों को प्रमाणपत्र बांटने का अधिकार मिल गया है। संजय निरूपम के बारे में कोई क्या कह सकता है?उन्होंने सार्वजनिक रूप से जवानों द्वारा अंजाम दिए गए साहसिक ऑपरेशन को फर्जी ठहरा दिया और भारतीय सेना से सुबूत की मांग की। इससे पहले हमने किसी राजनेता को अपनी सेना के ऑपरेशन पर इस तरह संदेह प्रकट करते और बहस को उस स्तर पर ले जाते नहीं देखा जिससे कि वह दुश्मन की नजरों में एक हीरो बन जाए।

पाकिस्तानी मीडिया ने पीओके में भारतीय सेना की कार्रवाई की उपेक्षा की और इस सर्जिकल स्ट्राइक की कहानी को बकवास बताने के लिए उसने राहुल गांधी, केजरीवाल और निरूपम के बयानों को सुबूत के तौर पर पेश किया। ये राजनेता पाकिस्तानी मीडिया के आंखों के तारे बन गए और पाकिस्तान में ट्विटर पर पाकस्टैंड विद केजरीवाल सबसे ऊपर ट्रेंड करने लगा। इन राजनेताओं को तनिक भी भान नहीं है कि वे अपनी ओछी राजनीति से जवानों की भावनाओं को कितनी चोट पहुंचा रहे हैं जिस सर्जिकल स्ट्राइक पर वे संदेह जता रहे है और सवाल उठा रहे हैं उसकी जानकारी 29 सितंबर को सीधे भारतीय सेना के डीजीएमओ (सैन्य अभियान के महानिदेशक) लेफ्टिनेंट जनरल रणबीर सिंह द्वारा दी गई थी। डीजीएमओ ने अपने बयान में कहा कि इस बात की विशेष और विश्वसनीय सूचना मिली थी कि कुछ आतंकवादी भारत में घुसपैठ करने की फिराक में सीमापार गुलाम कश्मीर में विभिन्न लांच पैड पर तैयार बैठे हैं और उनकी मंशा जम्मू-कश्मीर और दूसरे राज्यों में प्रमुख शहरों में हमला करने की है। आतंकवादियों को विभिन्न

लांच पैड पर ही नेस्तनाबूद करने के लिए भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया। यह ऑपरेशन इस बात पर केंद्रित था कि ये आतंकवादी अपने मकसद में कामयाब न हो सकें और हमारे नागरिकों को नुकसान न पहुंचा सकें। सेना की कार्रवाई में आतंकवादियों और उनके मददगारों को भारी क्षति पहुंची है। भारतीय सेना के डीजीएमओ ने यह भी बताया कि उन्होंने पाकिस्तानी सेना के डीजीएमओ से संपर्क कर इस सर्जिकल स्ट्राइक की जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि भारत की मंशा इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखना है, लेकिन हम सीमापार से आतंकवाद को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं करेंगे। यह कार्रवाई पाकिस्तान के उस बयान के तहत ही की गई है जिसमें उसने जनवरी 2004 में कहा था कि वह भारत के खिलाफ आतंकवादी गतिविधियां चलाने के लिए अपनी जमीन का इस्तेमाल नहीं होने देगा।

विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के नेताओं द्वारा आई प्रतिक्रियाएं 1965 और 1971 में (जब कांग्रेस सत्ता में थी) पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध के दौरान सभी पार्टियों द्वारा राजनीति से ऊपर उठकर दिखाई गई एकता के सर्वथा विपरीत है। इन युद्धों के दौरान और बाद में संसद में हुई बहस में सभी राजनीतिक दलों ने विरोध की भावना को परे रखकर एकता की भावना प्रकट की और आतंकवाद बढ़ाने और उन्माद भड़काने के लिए पाकिस्तान पर कड़ा दंड लगाने की मांग की। अटल बिहारी वाजपेयी, नाथ पई और अन्य नेताओं ने उन दिनों संसद में कांग्रेस सरकार को पूर्ण समर्थन दिया और हमारे जवानों के साहस की प्रशंसा की। 93 हजार पाकिस्तानी जवानों द्वारा भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण के साथ ही जब 1971 का युद्ध समाप्त हो गया तब वाजपेयी ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व की तारीफ की और उनकी तुलना देवी दुर्गा से की जिसे सभी समाचार पत्रों ने प्रथम पृष्ठ पर प्रमुखता से प्रकाशित किया। लेकिन कांग्रेस जब विपक्ष की कुर्सी पर बैठती है और खासकर उसका नेतृत्व नेहरू-गांधी परिवार के हाथों मे जाता है तब वह अजीब तरीके से व्यवहार करती है। जब वाजपेयी छह साल प्रधानमंत्री की कुर्सी पर रहे थे तब भी यह दिखाई दिया था, लेकिन वर्तमान में वह जिस तरह का रवैया दिखा रही है वह पहले कभी नहीं देखा गया है। अब पार्टी सेना के बयान को भी संदेह की नजर से देख रही है। शंकालु और अविश्वासी कांग्रेस अब भारतीय सेना के डीजीएमओ से सुबूत चाहती है। इससे ज्यादा शर्मनाक व्यवहार किसी ने कहीं नहीं देखा होगा। क्या यह अभी भी भारतीय 'राष्ट्रीय' कांग्रेस है?❖

भारत रूस में 16 करार, आतंक की भी होगी हार

भारत और रूस के बीच डिफैंस, एनर्जी, इन्फ्रास्ट्रक्चर, स्पेस, साइंस और रिसर्च से जुड़े विभिन्न सैक्टरों में कई अहम समझौते हुए हैं जिनमें 43,000 करोड़ का एस 400 एयर डिफैंस सिस्टम मुख्य है यह सिस्टम 400 किलोमीटर दूर मौजूद टारगेट को भी ट्रैक कर लेगा। गोवा में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और पी.एम. नरेन्द्र मोदी के बीच शनिवार को हुई द्विपक्षीय बातचीत के बाद इन समझौतों का ऐलान हुआ। दोनों देशों के बीच 16 समझौते और विभिन्न क्षेत्रों में 3 अहम ऐलान हुए। दोनों ही देशों ने आतंकवाद पर एक-दूसरे के रूख का समर्थन किया और विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया। इस डिफेन्स सिस्टम की अतिरिक्त विशेषता यह है कि-

- *36 न्यूक्लियर पावर मिसाइलों को एक साथ खत्म करने की इसमें ताकत है।*
- *यूएस के सबसे एडवांस्ड फाइटर जैट-एफ-35 को गिराने की भी क्षमता रखता है।*❖

त्याग का मंत्र
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा

'तेन त्यक्तेन भुंजीथा:' वाक्य का अर्थ आप समझते हैं, तभी त्याग करते हैं और सुख भोग रहे हैं। राम ने राज्य छोड़ा तो भगवान बनकर अयोध्या आये और राज का सुख भोगा।

यह सूत्र यह कहता है, इतना ही कहता है, सीधी-सीधी बात कि जो छोड़ता है वह भोगता है। यह नहीं कहता कि तुम्हें भोगना हो तो तुम छोड़ना। यह कहता है कि अगर तुम छोड़ सके, तो तुम भोग सकोगे। लेकिन तुम भोगने का ख्याल अगर रखो, तो तुम छोड़ ही नहीं सकोगे।

अदभुत है सूत्र। पहले कहा, सब परमात्मा का है। उसमें ही छोड़ना आ गया। जिसने जाना, सब परमात्मा का है, फिर पकड़ने को क्या रहा?पकड़ने को कुछ भी न बचा। छूट गया। और जिसने जाना कि सब परमात्मा का है और जिसका सब छूट गया और जिसका मैं गिर गया, वह परमात्मा हो गया। और जो परमात्मा हो गया, वह भोगने लगा, वह रसलीन होने लगा, वह आनंद में डूबने लगा। उसको पल-पल रस का बोध होने लगा। उसके प्राण का रोआं-रोआं नाचने लगा। जो परमात्मा हो गया, उसको भोगने को क्या बचा?सब भोगने लगा वह। आकाश उसका भोग्य हो गया। फूल खिले तो उसने भोगे। सूरज निकला तो उसने भोगा। रात तारे आए तो उसने भोगे। कोई मुस्कुराया तो उसने भोगा। सब तरफ उसके लिए भोग फैल गया। कुछ नहीं है उसका अब, लेकिन चारों तरफ भोग का विस्तार है। वह चारों तरफ से रस को पीने लगा।

धर्म भोग है। और जब मैं ऐसा कहता हूं, धर्म भोग है, तो अनेकों को बड़ी घबराहट होती है। क्योंकि उनको ख्याल है कि धर्म त्याग है। ध्यान रहे, जिसने सोचा कि धर्म त्याग है, वह उसी गलती में पड़ेगा-वह इनवेस्टमेंट की गलती में पड़ जाएगा। त्याग जीवन का तथ्य है। इस जीवन में पकड़ना नासमझी है। पकड़ रहा है, वह गलती कर रहा है-सिर्फ गलती कर रहा है। जो उसे मिल सकता था, वह खो रहा है, पकड़कर खो रहा है। जो उसका ही था, उसने घोषणा करके कि मेरा है, छोड़ दिया। लेकिन जिसने जाना कि सब परमात्मा का है, सब छूट गया। फिर त्याग करने को भी नहीं बचता कुछ। ध्यान रखना, त्याग करने को भी उसी के लिए बचता है, जो कहता है, मेरा है।

एक आदमी कहता है कि मैं यह त्याग कर रहा हूं, तो उसका मतलब हुआ कि वह मानता था कि मेरा है। सच में जो कहता है, मैं त्याग कर रहा हूं, उससे त्याग नहीं हो सकता है। क्योंकि उसे मेरे का खयाल है। त्याग तो उसी से हो सकता है जो कहता है, मेरा कुछ है नहीं, मैं त्याग भी क्या करूं। त्याग करने के लिए पहले मेरा होना चाहिए। अगर मैं कुछ कह दूं कि यह मैंने आपको त्याग किया-कह दूं कि यह आकाश मैंने आपको दिया, तो आप हंसेंगे। आप कहेंगे, कम से कम पहले यह पक्का तो हो जाए कि आकाश आपका है! आप दिए दे रहे हैं! मैं कह दूं कि दे दिया मंगल ग्रह आपको, दान कर दिया। तो पहले मेरा होना चाहिए। त्याग का भ्रम उसी को होता है जिसे ममत्व का ख्याल है।

नहीं, त्याग छोड़ने से नहीं होता। त्याग इस सत्य के अनुभव से होता है कि सब परमात्मा का है। त्याग हो गया। अब करना नहीं पड़ेगा। घटित हो गया। इस तथ्य की प्रतीति है कि सब परमात्मा का है, अब त्याग को कुछ बचा नहीं। अब आप ही नहीं बचे जो त्याग करे। अब कोई दावा नहीं बचा जिसका त्याग किया जा सके। और जो ऐसे त्याग की घड़ी में आ जाता है, सारा भोग उसका है। सारा भोग उसका है। जीवन के सब रस, जीवन का सब सौंदर्य, जीवन का सब आनंद, जीवन का सब अमृत उसका है।

इसलिए यह सूत्र कहता है, तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: जिसने छोड़ा उसने पाया। जिसने खोल दी मुट्ठी, भर गई। जो बन गया झील की तरह, वह भर गया। जो हो गया खाली, वह अनंत संपदा का मालिक है।❖ ***साभार : ईशावास्य उपनिषद***

चुटकुले

मोटू, 'मुझे टेनिस के बारे में आपसे ज्यादा पता है।'
पतलू, 'अच्छा तो यह बताओ कि टेनिस के नेट में कितने छेद होते हैं?'

पापा, 'बेटा, अमेरिका में 15 साल के बच्चे भी अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं।'
बेटा, 'लेकिन पापा भारत में तो एक साल का बच्चा दौड़ने भी लगता है।'

सोनू, 'क्या तू इंग्लिश जानता है?
शिवम्, 'हां, जानता हूं।
रोहन, 'अच्छा ठीक है तो यह बता कि नाग पंचमी का उल्टा क्या होगा?'
शिवम्, 'इसमें क्या बड़ी बात है। इसका उल्टा होगा, नाग डू नॉट पंच मी।'

रामू का बेटा स्कूल जाते हुए रो रहा था। रामू, 'शेर के बच्चे रोते नहीं हैं।'
बेटा, 'शेर के बच्चे स्कूल भी नहीं जाते।'

सोनू, 'लो फिर लाइट चली गई।'
मोनू, 'लाइट ही तो गई है, पंखा चालू कर दे।'
सोनू, 'फिर वही पागलों वाली बात, अगर पंखा चालू करूंगा तो मोमबत्ती बुझ जाएगी।'

1. सर्जिकल स्ट्राइक 2. पुर्तगाल 3. बीड़-बिलिंग 4. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष 5. दिल्ली 6. नौणी 7. कुल्लू व मैसूर 8. 40 हजार करोड़ 9. सोलन 10. अहमदाबाद

प्रश्नोत्तरी

1. भारतीय सेना द्वारा पीओके में की गई कार्रवाई का क्या नाम था?
2. संयुक्त राष्ट्र संघ के नये महासचिव किस देश से सम्बन्ध रखते हैं?
3. पैराग्लाइडिंग की प्रतियोगिता किस स्थान पर आयोजित की जाएगी?
4. भारतीय वैदिक दर्शन में कितने पुरुषार्थ माने गए हैं?
5. आगामी भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला कहाँ आयोजित किया जाएगा?
6. हिमाचल प्रदेश का एकमात्र बागवानी विश्वविद्यालय किस स्थान पर है?
7. दशहरे के लिए प्रसिद्ध दो भारतीय शहर कौन-कौन से हैं?
8. चीन के साथ में भारत के व्यापार की राशी कितनी है?
9. प्रसिद्ध काली टिब्बा किस स्थान पर है?
10. भारत व न्यूजीलैण्ड के बीच पहला एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच कहाँ खेला गया।

शुभकामनाओं सहित

बाबा बाल जी

कोटला कलां
ज़िला ऊना, हिमाचल प्रदेश

Newyork
RESIDENCY
...Home in Hills
Approved By GOVT. of H.P.
Registration No. 279,
Licence No.-HIMUDA LIC-03/2012.
Features & Facilities
• Ultra-modern Club House
• Gymnasium
• Swimming Pool
• Aerobic & Yoga Hall
• SPA, Sauna
• Puting Range
• Jogging Track
• Ample Parking Space
• Library
• Gated Community
• East Facing & Two-side Open Flats
• 80% Open Area
• Multi-tier 24x7 Security
• Fire Fighting System*
• Shopping Arcade
• Restaurants
1, 2, 3 BHK & Studio Apartments 12% assured return & lease option is available
Corporate Office: SCO 210-11, 4th Floor, Sector 34-A, Chandigarh
Site Office: Chail Road, Kandaghat, Near Shimla, Distt. Solan (H.P.)
Tel: 0172-4000173, +91 872 509 2222
www.newyorkresidency.in
Loan Facility Available from:

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

HIM AGRO FOOD CORPORATION
Global Solution Provider For Agro Food Industry

BRINGING TOGETHER THE MAKER & THE TAKER

New age Technology that connects the Farmer and the Consumer; serving India from the farm to the fork.

CONTROLLED ATMOSPHERE STORES

TECHNOLOGY SOLUTIONS FROM FARM TO FORK

CONTRACT FARMING

FARM SUPPORT SERVICES

FOOD PROCESSING

ORGANIC FARMING

MEGA FOOD PARK

Season's Greetings

HIM AGRO FOOD CORPORATION, SCO 118-119-120, 4th FLOOR, SECTOR 34-A, CHANDIGARH-160022, PHONE: +91 172 4989999, www.hafcoindia.com

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph.: 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।